



“सुरत शब्द योग”

- “आदि गुरए नमह । जुगादि गुरए नमह । सतिगुरए नमह ।
श्री गुरदेवए नमह ।”

दास दोनों हथ जोड़ के संगत दे चरना विच मत्था
टेकटे होये, आपणे गुनाहां दी माफी लई अरदास बेनती करदा
है संगत दी समर्था है बक्षण दी क्रिपालता करो संगत दे बक्षी
होये नूं गुरु साहब वी बक्षा देंदे हन ।

- “सचु मिलै सचु उपजै सच महि साचि समाई । सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाई । नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाई ।” (1-18)
- “मनमुख बोलै अंधुलै तिसु महि अगनी का वासु । बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु । ओना आपणी अंदरि सुधि नहीं गुर बचनि न करहि विसासु ।” (3-1415)
- “सिमृत सासत पङ्गहि मुनि केतै बिनु सबदै खुरति न पाई । त्रैगुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई ।” (3-1130)
- “जगतु उपाई तुधु धर्थै लाइआ भूड़ी कार कमाई । जनमु पदारथु जुऐ हारिआ सबदै सुरति न पाई ।” (3-1155)
- “दुंदर दूत भूत भी हाले । खिंचो ताणि करहि बेताले । सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता है । कूँड कलरु तजु भस्मै ढेरी । बिनु नावै कैसी पति तेरी । बाधे मुकति नाही जुग चारे जमकंकरि कालि पराता है ।” (1-1031)
- “दुनिआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो । चरपटु बोलै अउधू नानक देहं सचा बीचारो । जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे । सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे । रहहि इकाति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो । अगम अगोचरु देखि दिखाए नानक ता का

दासो । सुणि सुआमी अरदासि हमारी पुछ्त साचु बीचारो ।
 रौसु न कीजै उतरु दीजै किड पाईए गुर दुआरो । इहु मनु
 चलतउ सच घरि वैसै नानक नामु अथारो । आपे मेल
 मिलाए करता लागै साचि पिआरो ।” (1-938)

- “पारि साजबु अपारु प्रीतमु गुर सबद सुरति लंघावए । मिलि
 साथ संगति करहि रखीआ फिरि न पछोतावए ।” (1-1113)
- “तन मन खोजे ता नाउ पाए । थावतु राखै ठाकि रहाए ।
 गुर की बाणी अनदिन गावै सहजे भगति करावणिआ । गुर
 की बाणी अनदिन गावै सहजे भगति करावणिआ । इस
 काइआ अन्दर वस्तु असंखा । गुरमुखि साचु मिलै ता बेखा
 । नउ दरवाजे दसवै मुक्ता अनहद सबदु वजावणिआ ।”
 (3-110)
- “मुकति भई बध्न गुरि खोल्हे सबदि सुरति पति पाई ।
 नानक राम नामु रिद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलाई ।”
 (1-1255)
 (पाठी माँ साहिबा)



अज दे इस रुहानी सत्यंग लई गुरु साहब
 जो शब्द बक्षीश कर रहे हन ओ है “शब्द सुरत दा मेल ।”
 गुरु नानक साहब दी बाणी ऐ उपदेश करदी है सुरत, छ्याल,

आत्मा इस जगत् दे विच आधार है ताकत दा उस सिरजनात्मक शक्ति दा अंश कुल आलम सारी सृष्टि मन बुद्धि और इन्द्रियां दे जरिये जो कुछ वी दृष्टिगोचर है इन्हां साधन दे जरिये ओ सिरजनात्मक शक्ति बोध करादीं है ज्ञान देंदी है। ऐ ज्ञान सानूं किस ढंग दे नाल प्राप्त होंदा है इक ताकत है जिसनूं गुरु नानक साहब बलराम कहदें हन ओ राम जो इक बल ताकत स्वरूप है बोध कराण वास्ते इस जगत् दा कार-व्यवहार करन वास्ते उसी नूं असी ख्याल कहदें हां आत्मा कहदें हां और पंजाबी विच जिसनूं सुरत केहा जांदा है ऐ ताकत कम करदी है इक सीमा तक ऐ शरीर इसनूं मिलया है साधन दे रूप विच। मन साधन है, बुद्धि साधन है इन्द्रियां जेडियां मिल कर के असी इसनूं शरीर कहदें हां साधन है इस आत्मा दा, इस सुरत दा अगर ऐ शरीर न होवे आत्मा अनंत गुणां दी स्वामिनी उस सिरजनात्मक शक्ति दा अंश उस दे बावजूद इस वक्त इस मुल्क दे विच ऐ कार-व्यवहार नहीं कर सकदी ऐ साधन अगर पूरे न होण असी इस वक्त साधन लै करके बैठे हां यानि शरीर अपंगता अख न होवे सुरत देख नहीं सकदी, कन न होवण सुरत सुण नहीं सकदी इसदी आपणी ताकत बारह सूरज दी है इतनी विशाल ताकत है बारह सूरज दी। कोई सूरज इसदे अन्दर प्रवेश नहीं कर गये ऐ समझण दी इक कसौटी है

। इक ढंग है कि इतनी ताकत होण दे बावजूद इस वक्त
कितनी सीमित हो करके इस जगत दा कार - व्यवहार कर
रही है यानि के मजबूर हो जांदी है अगर शरीर अपंग होवे ।
कोई अंग कम न करे साड़ी जिन्दगी कितनियां मुश्किल भरी
हो जायेगी विचार करके देख लो । अगर हथ कम न करे कोई
लत कम न करे शरीर दे अन्दर दा कोई पुर्जा कम न करे
किसी नूं sugar दी बीमारी है, किसी नूं piles दी बीमारी है,
किसी नूं heart दी बीमारी है । ऐ बीमारियां क्यों ने क्योंकि
ऐ साधन जेडे मिले ने सानूं ऐ पूरा कम नहीं कर रहे ते इसदे
विच फर्क की है ! भिन्न - भेद क्यों है इक नूं साधन पूरा
मिलया है । इक नूं अधूरा मिलया है और सूरत मजबूर हो गई
कम करन वास्ते इस मुल्क दे विच इक नियम है करम दा
नियम, दूसरा नियम है मौत दा । इक निश्चित सीमा तक इस
आत्मा नूं ऐ साधन मिले ने कम करन वास्ते और कम करन
दी निशानी है प्राण शक्ति । जिसनूं असी प्राण वायु वी योग
विच कहदें हाँ ऐ प्राण वायु इक निश्चित सीमा तक मिलदी है
और निश्चित सीमा दे विच ही रह करके इस आत्मा ने, इस
सुरत ने आपणां कम करना है याद रखणा ऐ प्राण शक्ति
निश्चित सीमा तक है । मत कोई समझे कि असी इस नूं वदा
सकदे हाँ घटा जरुर सकदे हाँ किस तरीके दे नाल आत्म हत्या

करके इस शरीर नूं इस साधन नूं निष्ट कर सकदे हां सानूं बुद्धि
मिली है साधन दे रूप दे विच इस बुद्धि दा असी सदुपयोग
करिये या दुरुपयोग करिये । आपणे इस मिले होये साधन नूं
असी अनिष्ट कर देईये संसार दे इस भोगा दे विच लगा करके
इसनूं खत्म कर लईये या परमात्मा दे नाल जोड़ लईये । ऐ
बुद्धि मिली है विवेकता लई । विवेकता हासिल करके असी
आपणा फैसला करना है ऐ जीव दा आपणा निजी फैसला है
ऐ कोई जबरदस्ती नहीं है जीव वास्ते । इस आत्मा लई कि ओ
किस रास्ते तै चलदी है और किसनूं प्राप्त करना चाहदीं है ।
ऐ सारीया ही चीजा जेडिया मिलिया ने ऐ निश्चित सीमा तक
साधन दे रूप विच मिलिया ने असी आपणा कम करना है ।
दूसरा लफज है सुरत दे नाल शब्द अज दा मजमून है शब्द ।
शब्द दा भाव पहला है और आखिरी आवाज । शब्द दा मतलब
ऐ नहीं है कि गुरुमुखी दे लिखे होये लफज या कोई विशेष
ग्रन्थ या किताबा । उन्हा नूं वी असी शब्द कहदें हां ओदे विच
कोई शक नहीं इक शब्द लफज दे विद्वाना ने पचास (पंजा)
50 तों वद अर्थ कडे ने इस वक्त असी केडे अर्थ नूं ऐथे धारण
करना है । सिर्फ आवाज नूं रुहानियत दे विच जेडी शब्द दी
आवाज है इस आवाज दे विचों इक प्रकाश निकलदा है इस
आवाज दे विचों आ रहे प्रकाश नूं ही असी ऐथे मुख रख करके

अज दे मजमून नूं समझाणा है । सुरत जेड़ी है आत्मा जेड़ी है
इस आवाज नूं कदों योग करेगी कदों मिलेगी योग दा मतलब
है मिल जाणा यानि के प्लस (+) दा निशान उसनूं वी असी
हिसाब दे विच योग कहदें हां और इस मुल्क दे विच असी
क्या देखदे हां पतंजलि दे योग सूत्र बहुत अच्छे तरीके नाल
प्रचारित कीते गये ने ते ओ जेड़ा योग है । इक विशेष मत
धर्म दे जीव कहदें ने भाई सानूं योग दी जरुरत ही नहीं हैंगी
विचार करके देख लो जितने वी सत्संग असी सुणदे हां
जितनिया वी महान आत्मा इस सत्संग दे विच बैठदिया ने इस
सत्संग नूं प्रगट करन वास्ते सत दी ताकत नूं याद रखणा ऐ
सारे ग्रन्थ पौथिया किताबा नूं पढ़ करके ही बैठदिया ने दृष्टिदें
ने आपणी असलियत नूं यानि के इक मुखौटा लगा लेआ जांदा
है चेहरे दे ऊपर और इक नवा मत और धर्म दा प्रचार शुरु
कर दिजा जांदा है । पतंजलि दे योग सूत्र तों कोई इन्कार
नहीं कर सकदा । ऐ ऋषि - मुनि कौण सन पतंजलि कौण
सन ! विचार करके देख लो अज असी उन्हां नूं गुरु दी संज्ञा
देंदे हां पिछले जन्मा विच ऐ ऋषि मुनि ही सन । इन्हां ने तप
कीते ने तपस्या कीती है परमात्मा नूं मिलण वास्ते इस शब्द
इस आवाज दे विचों प्रकाश आ रेहा है प्राप्त करन वास्ते और
जिथे तक इन्हा दी रसाई होई, जिथे तक इस जीवात्मा ने इस

ਮੁਲਕ ਵਿਚ ਆ ਕਰਕੇ ਮੇਹਨਤ ਕਿਤੀ ਤਥਾ ਮੇਹਨਤ ਜੂਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ
ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਿਤਾ ਲਿਖ ਦਿਤਾ ਆਣ ਵਾਲੀ ਨਸ਼ਲਾਂ ਵਾਸਤੇ ਤਥਾਨੂੰ ਅਖੀ
ਤਥਾ ਤ੍ਰਧਿ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਸੱਜਾ ਦੇ ਕਰਕੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਦੇ ਹਾਂ । ਪਰ ਕਿਤਨੀ
ਵਡੀ ਖੂਬੀ ਹੈ ਵਿਚਾਰ ਕਰਕੇ ਦੇਖੋ ਕਿਤਨੇ ਵਡੇ - 2 ਮਹਾਨ ਗ੍ਰਨਥ
ਵੇਦ ਸ਼ਾਸਤਰ, ਪੁਰਾਣ ਦਿਤੇ ਗਏ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮਹਾਨ ਆਤਮਾ ਨੇ ਦਿਤੇ ਨੇ ਇਸ
ਮੁਲਕ ਦੇ ਵਿਚ ਆ ਕਰਕੇ ਮੇਹਨਤ ਕਰਕੇ ਤੇ ਕਢੀ ਵੀ ਆਪਣਾ ਪਥ
ਆਪਣਾ ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਚਲਾਯਾ । ਤਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਸ ਚੀਜ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ
ਕਿਤਾ, ਜੇਡੀ ਵੀ ਮੇਹਨਤ ਕਰਕੇ ਹਾਸਿਲ ਕਿਤਾ ਤਥਾਨੂੰ ਕਿਤਾਬਾ ਵਿਚ
ਲਿਖ ਕਰਕੇ ਇਕ ਨਸ਼ਲ ਲਈ ਦੇ ਦਿਤੀ ਇਕ ਦੇਨ ਮਹਾਨ ਦੇਨ ਔਰ
ਏ ਸਾਰੀਯਾਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਅਕਾਲ - ਪੁਰਖ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ
ਕਿਤਾ ਓਰ ਏ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਮਤ ਵਾਲੇ ਕਿ ਕਹਦੇਂ ਨੇ ਭਈ ਏ ਪਹਲੇ ਮਣਡਲ
ਦੀਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਨੇ ਜੇਡਾ ਬਚਾ ਕਚੀ ਵਿਚ ਫੇਲ ਹੋ ਚੁਕਾ ਕਚੀ
ਵਿਚ ਬੈਠਣ ਦੀ ਤਮੀਜ ਨਹੀਂ ਕਚੀ ਦਾ ਭਾਵ ਕਿ ਹੈ ਬਚੇ ਜੂਂ ਕਿ
ਸਿਖਾਯਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਲਾਸ ਦੇ ਵਿਚ ਸਿਰਫ ਬੈਠਣਾਂ ਓਨ੍ਹਾਂ ਇਕ ਘੰਟੀ
ਦਾ ਆਵਾਜ ਦਾ ਮਤਲਬ ਸਿਖਾਯਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਔਰ ਇਕ ਕਹਾਣੀ
ਖੁਣਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਬਸ ਮਕਸਦ ਇਕੋ ਹੀ ਹੈ ਕਿ ਕਲਾਸ ਦੇ ਵਿਚ
ਬੈਠਣਾਂ ਜਾਣ ਲਵੇ । ਤਥਾ ਕਚੀ ਦੀ ਜਮਾਤ ਫੇਲ ਹੋਏ ਬਚੇ ਜੂਂ
ਜੇਡਾ ਕਲਾਸ ਦੇ ਵਿਚ ਬੈਠਣਾਂ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦਾ ਆਜ਼ਾ ਚੁਕ ਜੇਡੇ ਕਿ
graduation ਹੈ graduate ਓਥੇ ਬਿਠ ਦੇਓ ਧਾਨੀ ਕੇ ਓਨ੍ਹਾਂ
ਕਹੋ ਐਲਜੇਬਰੇ ਦੇ ਸਵਾਲ ਜੇਡੇ ਨੇ ਓਨ੍ਹਾਂ ਹਲ ਕਰ । ਕਰ ਲੇਗਾ ਓ

ਕਚ੍ਚਾ ! ਜਿਸਨੂੰ ਤਮੀਜ ਨਹੀਂ ਹੈ ਬੈਠਣ ਦੀ ਕ ਖ ਉਸਨੇ ਪਢਾਯਾ
ਨਹੀਂ ਕਚ੍ਚੀ ਤੋਂ ਪਕਕਿ ਨਹੀਂ ਚਢਿਆ ਪਹਲੀ, ਦੂਜੀ, ਤੀਜੀ ਚਢਿਆ
ਹੀ ਨਹੀਂ ਤੇ ਪਹਲੇ ਮਣਡਲ ਦੀ ਕਿਤਾਬ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਪਛੇ ਬਿਨਾ ਉਥ ਤੇ ਪੂਰਾ
ਉਤਰੇ ਬਿਨਾ ਇਸ ਗ੍ਰੇਜੁਏਸ਼ਨ *graduation* ਦੀ ਡਿਗ੍ਰੀ ਨੂੰ ਕੋਈ
ਹਾਸਿਲ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ । ਬੇਸ਼ਕ ਕਚ੍ਚੀ ਜਮਾਤ ਫੇਲ ਨੂੰ ਕਹ
ਦੇਓ ਕਿ ਤੇਨੂੰ B.A. ਦੀ ਡਿਗ੍ਰੀ ਦੇ ਦਿਤੀ । ਡਾਕਟਰੀ ਦੀ ਡਿਗ੍ਰੀ ਦੇ ਦਿਤੀ
ਇੰਜੀਨੀਰਿੰਗ ਦੀ ਡਿਗ੍ਰੀ ਦੇ ਦਿਤੀ ਕਿਆ ਓ ਪੁਲ ਬਣਾਂ ਲੇਗਾ ਓ
ਇੰਜੀਨੀਅਰ ਕਿਆ ਕਿਸੀ ਮੰਜ ਨੂੰ ਪਹਚਾਣ ਕਰਕੇ ਦਰਵਾਈ ਦੇ ਸਕਦਾ
ਹੈ । ਕਲਪਨਾ ਦਾ ਵਿ਷ਯ ਹੈ ਦਰਵਾਈ ਦੇਗਾ ਤੇ ਮੌਤ ਦੀ ਮਾਰ ਦੇਗਾ ਤੇ
ਪੁਲ ਬਣਾਵੇਗਾ ਤੇ ਕਿਸੀ ਭਾਰ ਨੂੰ ਸਹ ਨਹੀਂ ਸਕੇਗਾ ਪੁਲ ਢਹ ਜਾਵੇਗਾ
। ਐ ਹਾਲਤ ਹੈ ਇਕ ਮਤ - ਧਰ्म ਵਾਲੇਯਾਂ ਦੀ ਜੇਡੇ ਨਿਨਦਿਆ ਕਰਦੇ ਨੇ
ਇਨ੍ਹਾਂ ਵੇਦਾ ਸ਼ਾਸਤ੍ਰਾਂ ਦੀ ਔਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਗ੍ਰਨਥਾਂ ਦੀ ਪਤਨਜਲਿ ਦੇ ਅਠ ਯੋਗ
ਸੂਤ੍ਰ ਬਿਲਕੁਲ ਸਪ਷ਟ ਹਨ । ਧਮ, ਨਿਯਮ, ਆਸਨ, ਪ੍ਰਤਿਧਾਨ,
ਪ੍ਰਾਣਾਧਾਰ, ਧਿਆਨ, ਧਾਰਣਾ, ਸਮਾਧਿ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅਗੇ ਜੇਡੇ ਨੇ ਅੰਗ
ਹੈਂਗੇ ਨੇ ਅੰਗ ਦੇ ਉਪਅੰਗ ਧਮ, ਨਿਯਮ ਕਿਸਨੂੰ ਧਾਰਣ ਕਰਨਾ ਹੈ,
ਕਿਸਨੂੰ ਤਾਗ ਕਰਨਾ ਹੈ । ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦੇ ।
ਇਕ ਮਿਸਾਲ ਦੇਂਦੇ ਨੇ ਪਹਲੇ ਅੰਗ ਦੇ ਉਪਅੰਗ ਨੂੰ ਕਿਸ ਨੂੰ ਧਾਰਣ
ਕਰਨਾ ਹੈ ਸਚ ਨੂੰ ਕਿਸ ਦਾ ਤਾਗ ਕਰਨਾ ਹੈ ਝੂਠ ਦਾ, ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਂ
ਨੇ ਕੀ ਏਥੋਂ ਗਢੀ ਤੋਂ ਕੀ ਹੁਕਮ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਸਚ ਨੂੰ ਧਾਰਣ ਕਰਨਾ
ਹੈ ਔਰ ਕ੍ਰਾਂਧ ਦਾ ਤਾਗ ਕਰਨਾ ਹੈ । ਕਿਆ ਐ ਪਤਨਜਲਿ ਦਾ ਯੋਗ ਸੂਤ੍ਰ

नहीं है और जेड़ा असी चेहरा लगा करके सत्संग दे विच हाजिर
होदें हाँ बैठदे हाँ दुनिया नूँ रस्ता देण वास्ते ओथे पंतजलि दा
असी निरादर करदे हाँ निन्दया करदे हाँ विचार करके देख लो
क्या जेड़ा हुकम असी प्रचारित कर रहे हाँ उस अकाल पुरुख
दा क्या ओ पंतजलि दे योग सूत्रां दा उपअंग नहीं है कि सच
नूँ धारण करो झूठ दा त्याग करो ब्रह्मचार्य दा व्रत रखे बिना
इस पौढ़ी ते कोई माई का लाल पैर नहीं रख सकदा याद
रखणा। किसे ने हासिल कीता, किसे ने धारण कीता इस धर्म
नूँ नहीं, पर पंतजलि दे योग सूत्र दी निन्दया असी अवश्य करदे
हाँ। गलां ओही कर रहे हाँ जो योग सूत्र दे विच लिखिया
गई उस वक्तु युग काल दी जो सीमा सी जो मर्यादा सी ओदे
हिसाब दे नाल ऐदे अंग नूँ प्रचारित कीता। अज जो समा
(समय) चल रेहा है उसदे हिसाब दे नाल असी इसदे बहुत
सारे अंग नूँ धारण कीते बिना इस रस्ते ते चल ही नहीं सकदे
जिस नूँ परमार्थ केहा जांदा है परम - अर्थ। परम अर्थ नूँ
प्राप्त करना असी इस जगत दे विच अर्थ नूँ प्राप्त धर्म अर्थ
काम और मोक्ष ऐ चार पदार्थ लैण वास्ते इस आत्मा नूँ इस
जगत दे विच भेजया गया है और चार ऐ चार पदार्थों दे विच
असी कर की रहे हाँ असी अर्थ नूँ हासिल करन वास्ते काम नूँ

हासिल करन वास्ते सारा दिन रात दौड़ भज करदे हां पर धर्म और मोक्ष दी प्राप्ति लई कोई क्रिया करदे हां ! ओ असी बुझापे लई रख दिती जिस वेले सारी प्राण शक्ति खत्म हो जायेगी इक risk लै लेआ इक जुआ खेल लेआ कि आखिर दे विच जा करके असी इस मोक्ष नूं प्राप्त कर लवाँगें । जद तक कि जन्म ही जीवात्मा दा इन्सान दी जून ही मोक्ष वास्ते होई है । परमात्मा नूं मिलण वास्ते होई है । इस शब्द दे नाल जुझन वास्ते होई है पर असी उसनूं अलग कर के रख दिता । ऐ किसदी चाल सी ऐ किस ने पढ़ाया योग सूत्र ? क्या पंतजलि ने पढ़ाया ? क्या मन नूं साफ करन वास्ते विशे - विकारां तों दूर करन वास्ते इसदी मैल नूं धोण वास्ते क्या अठ योग सूत्रां दे विच कोई क्रिया नहीं रखी गई ? जरा विचार करके देख लो पूरा मुकम्मल हिसाब - किताब रखया गया है । शरीर दी शुद्धि, शरीर दी मर्यादा, शुद्धि दा भाव है मर्यादा बेशक उस वक्त जगत दे विच जो कुछ प्रचलित सी इस वक्त असी कर नहीं सकदे पर क्या शरीर नूं मर्यादा दे विच लिआये बिना असी इस पौढ़ी ते पैर रख लवाँगें अख बंद करके बैठ जावाँगें ते क्या भजन हो जायेगा ऐ सारीयां ही चालां ने, ऐ सारे ही मुखौटे ने जिस तरीके दे नाल कारण ऐ है कि प्रचार करन वाले खुद मुखौटा लगा कर के बैठदे ने ते दूसरे केड़े सुणनगें ओ किस

तरीके दे नाल इस जगत दे विचों मुखौटे दे नाल पार हो जाणगें
असलियत नूं कोई प्रगट करना नहीं चाहदा असलियत कोई
सुणना नहीं चाहदा सच दा बयान, सिर्फ जुबान दे नाल कह
देणा कि सच बोलो सच प्रगट नहीं हो सकदा सच नूं कोई
धारण नहीं करेगा । इक मिसाल चाहिदी है खुली किताब
चाहिदी है । उपदेश दे दिता विशे - विकारा विचों निकल जाओ
क्या विशे विकारा विचों निकल जाएं कदी आपणी निजी
जिन्दगी दे विच वी असी नजर मार के देखी है असी क्या कर
रहे हां, असी केड़े लोभ दे विच गोते लगा ढंग रहे हां और संसार
नूं कहदें हां लोभ दा त्याग कर दो । किस दे नाल हो सकदा
है ! इस सारी जिन्दगी दे विच अगर ऐ जीवात्मा उपदेश देण
दी बजाय आपणे आप नूं इस उपदेश दे ऊपर चलाणा शुरु
कर दे समझ लो मनुखे जन्म नूं असी सार्थक कर लेआ खट
लई, कमाई हो गई और अगर सारी उम्र सत्संग करदे रहे
दुनिया नूं पढ़ादें रहे टीचर बणे रहे और आप इक कदम वी न
चले ते साथ - संगत जी लख दी भीड़ ते अज वी इकट्ठी है जा
करके सत्संगा विच देख लो, लख दी । अगर इक कदम वी न
चले ते न ते साडी आत्मा दा कल्याण होयेगा ते जेडे सुणन
वाले ने कोई शक नहीं उन्हां दे विचों कोई सच नूं धारण करके
कल्याण कर जाये पर साडा कल्याण नहीं होयेगा और अगर

असी ता जिन्दगी दुनिया नूं पढ़ान दी गल छड़िये आपणे आप
नूं पढ़ाना शुरु कर दईये आपणे मन नूं पढ़ा लईये । आपणी
आत्मा नूं निरमल कर लईये परमात्मा वाले पासे लगा लईये
बेशक लखा दी नहीं हजारा सैकड़ा दी वी इकट्ठी नहीं होयेगी ।
पर साडी आपणी आत्मा दा कल्याण अवश्य हो जायेगा ते
असी इस जगत दे विच साध - संगत जी करन की आये हाँ
लोगा दा कल्याण करन आये हाँ या आपणा कल्याण करन
वास्ते आये हाँ असी आपणा मत ओर धर्म चलाणा पसन्द करदे
हाँ या कि उस अकाल पुरुख दी मर्यादा दे विच चलना पसन्द
करदे हाँ । विचार करो सोचो खूब सोचो, ऐ बुद्धि किस वास्ते
मिली है । असी दस वी (बीस) पंजा (पचास) हजार दी
investment करनी होवे दस बन्देया कोलों सलाह लैदें हाँ ।
बड़ा सोच विचार करदे हाँ । सारी रात चिंतन करदे हाँ नींद ही
नहीं आंदी जागदे रहदें हाँ सोदें नहीं, किस लई ! लाभ कमाण
वास्ते । “प्राणी तूं आइयो लाहा लैण लगा कितु कुफकड़े सभ
मुकद्दी चली रैण ।” ऐ रैण केड़ी सी ऐ आयु, ऐ प्राण शक्ति
कहदें ने केड़े कुफकड़े विच लगा होईया है ऐ सभ कुफकड़े ने
दूसरेया नूं उपदेश देणा आप उपदेश नूं धारण नहीं करना इस
तों बड़ा कुफकड़ा कोई नहीं हैगा और विचार कर के देख लो,
सारी जिन्दगी असी सवेर होंदी है असी दौड़ना शुरु करदे हाँ

रात हो जांदी है इसे तरीके दे नाल दिन चढ़दा है । “दिनस
 चढ़े फिर आथवै रैण सभाई जाई आव घटे नर न बूझै नित
 मूसा लाज टुकराई ।” ऐ मूसा कौण सी ! ऐ काल । ऐ काल
 रुपी मूसा चूहा ऐ लाज रुपी प्राण शक्ति नूं रख्सी नूं कट रेहा
 है दिन पल - पल प्राण शक्ति खत्म हो रही है इस वक्त वी
 असी इस सत्संग दी कीमत चुका रहे हाँ किस ढंग दे नाल ऐ
 प्राण शक्ति दे करके बिना कीमत दे साथ - संगत जी इस
 जगत दे विच कुछ नहीं मिलदा हुण जो कुछ असी इकट्ठा कर
 रहे हाँ प्राणी तूं लाहा लाभ लैण वास्ते आया सी । तूं विचार
 करके देख अंत दे विच किस ने तेरा साथ देणां है जो कुछ वी
 इकट्ठा कर रेहा है माँ - बाप, भैण - भाई, ऐ जो कुछ वी तूं
 इकट्ठा कीता है जड़ - चेतन लोक सम्बन्धां नूं पदार्थां नूं क्या
 ऐ तेरे साथ जाणगें तेरा साथ देणगें विचार करके देख लो, केड़ी
 पूंजी ने नाल जाणा है ते ऐ साडा लाभ दा सौदा है या हानि दा
 सौदा है । असी देखण दे विच ते बड़े ही कहदें हाँ ऐ पुत्र बड़ा
 कामयाब है बड़ा धन - दौलत इकट्ठी कर लई पदार्थ इकट्ठे
 कर लये ने कामयाब हो गया ऐ ते हुण विचार करके देख लो
 आखिरी समें फैसला होयेगा कि ऐ लाभ होईया या हानि होई
 है ऐ सारा कुछ जो कुछ ही “क्षिण महि भइया पराइआ ।”
 प्राणी तूं ऐ क्षिण दे विच जा करके ऐ सारा तेरे कोलों खो लेआ

जाणा है और तूं खाली हथ आया “नागा॑ आईया नागा॑ उठ जासी” ऐ नगे ही तूं जाणा है इक किल वी नहीं तेरे नाल जाणी इक सुई वी तेरे नाल नहीं ते तूं किस नूं इकट्ठा कर रेहा है । ते इस जगत दे विच विचार करके देख लो आत्मा ने जिस लाहे नूं लाभ नूं प्राप्त करना सी ओ सीगा शब्द । शब्द यानि के आवाज ऐ आवाज परमात्मा दा इक गुण है उस सिरजनात्मक शक्ति दा इक ऐसा अंग है जिस नूं असी आत्मा दा ही हिस्सा कह सकदे हां किस तरीके दे नाल आत्मा उसदा हिस्सा है अनंत गुणा॑ दी स्वामी है उसी तरीके दे नाल ऐ आवाज गुण नाम नूं कहा गया है, शब्द कहा गया है, कीर्तन कहा गया है, अकथ कथा कहा गया है, भाणा॑ कहा गया है, हुक्म कहा गया है जदों असी कहदें हां अकाल पुरुख जे हुक्म दे विच इस सृष्टि दी रचना कीती है ते हुक्म की है ऐ शब्द नूं ही हुक्म कहा गया है अलग - अलग लफजा॑ दे नाल अलग - 2 संता ने आपणिया॑ बाणिया॑ दे विच उस इक दे इस गुण नूं प्रगट कीता है इस आत्मा ने उस शब्द नूं प्राप्त करना है योग करना है मिल जाणा॑ है ते जदतकण असी योग नूं नहीं जाणदे मिलण नूं नहीं जाणदे किस तरीके दे नाल मेल हो सकदा है असी कदे वी इस रस्ते ते चल नहीं सकदे । ते पंतजलि दे जेडे योग सूत्र ने इन्हा॑ सारिया॑ नूं लगभग सारिया॑ नूं सानूं धारण करना

पयेगा । पर सानूं ते पढ़ाया ही नहीं गया कह दिता झाङू लगा
के बाहर कड दिता भई तुसी अख बंद करके बैठ जाओ
graduation दी असी तुहाडी क्लास लै लवाएँ । ते साध -
संगत जी ऐ graduation दी डिग्री किसी कम नहीं जे आण
वाली अख बंद होण दी देर है तुहाडी सारीयां ही डिग्रीयां जितने
वी नाम लये ने अमृत छके ने सभ इसे मुल्क दे विच रह जाणे
ने ऐ सब साधन है । गुरु साधन है । नाम साधन है । अमृत
साधन है अमृत हरि का नाम हरी दे नाम नूं अमृत कहा है पर
इस जगत दे विच आ करके सतिगुरु जेडी वी क्रिया ढेंदे ने,
जेडा वी हुकम ढेंदे ने, जेडा वी प्रचार करदे ने इस आत्मा दे
कल्याण लई इक साधन दिता जांदा है सिर्फ साधन । साधन
दा आपणा अर्थ है आपणा मक्सद है पर इसदे नाल इसदी
सीमा वी है ऐ नाम अमृत कम करेगा ते जींदे जी करेगा । मरन
दे बाद नहीं करेगा । मरन दे बाद कम करन वाला नाम जेडा
है मन, बुद्धि और इन्द्रियां तों परे दी वस्तु है उसे नूं शब्द कहा
गया है उसे तरीके दे नाल विचार करके देख लो इक मर्यादा
। इस मर्यादा दे विच जिसनूं असी नाम कहदें हां कि असी
नाम ले आये हां अमृत छक आये हां । ऐ इक मर्यादा दिती
गई है केड़ी मर्यादा कि गुरु दे हुकम दी पालना करनी है असी
गुरु दे हुकम विच आ जाणा हुकम की है ! साध - संगत जी

इस शरीर दे हुकम नूं किसे हासिल कीता है कि शरीर दी क्या मर्यादा है शरीर क्या हुकम करदा है जदों असी खाणा खादे हां ते इक डकार आदां है कुछ समय दे बाद कुछ बुरकिया जदों अन्दर जादिया ने, डकार की है । शरीर दा हुकम आ गया कि मैनूं हुण होर भोजन दी लोड नहीं, होर उर्जा दी लोड नहीं पर असी करदे हां कि डकार दा मतलब है कि कुछ होर खुराक चाहिदी है । कुछ होर बुरकिया पा दितिया ते इक लम्बा जेआ डकार आदां है उसदा मतलब है कि हुण मेरे हथ खड़े ने इस तों बाद मैं बर्दाश्त नहीं कर सकांगा मेरी जान बचाओ पर ओ जान बचाण दा मतलब असी कि कडदे हां कि भुख होर लगी है कुछ बुरकिया होर पा देओ । भाई ऐ सब्जी बड़ी स्वाद बणी है थोड़ी दो कडछियां होर पा देओ होर पा लई दो बुरकिया होर अन्दर ठूंस दितिया याद रखणा इक सीमा तक घओ (घी) की है अमृत है इस शरीर दे वास्ते पर इक सीमा है इसदी उसदे अगे जहर जहर जहर और सिर्फ जहर ही जहर है उसे ढंग दे नाल जदों असी इसदे विच इतनी उर्जा ठूंस दिती ऐनर्जी दी जरुरत है कि टेक्निकल दे विच कि 500 कैलोरी दी । असी ऐनूं तिन हजार (3000) कैलोरी दे दिती साध - संगत जी (2500) ढाई हजार कैलोरी ते जहर बण गया पंज सौ (500) कैलोरी ते उर्जा सी ते हुण विचार करके देख लो अगर इक

ਕਲਾਸ ਦੇ ਵਿਚ ਤਿਨ ਹਿੱਸੇ ਜਹਰ ਹੋਵੇ ਅਥੀ ਇਕ ਹਿੱਸਾ ਓਦੇ
ਵਿਚ ਪਾਣੀ ਦਾ ਮਿਲਾ ਦੇਈਧੇ ਤੇ ਕਿਆ ਓ ਪਾਣੀ ਜੇਡਾ ਹੈ ਜਹਰ ਨੂੰ
ਖਤਮ ਕਰ ਦੇਗਾ । ਅਮ੃ਤ ਬਣ ਜਾਯੇਗਾ ਕਢੀ ਵੀ ਨਹੀਂ ਧਾਨੀ ਕੇ
ਪਾਧਾ ਹੋਈਧਾ ਭੋਜਨ ਜਿਨੇ ਕਿ ਊਰਾ ਦੇਣੀ ਸੀ ਐਨਜ਼ੀ ਦੇਣੀ ਸੀ ਨਾ
ਓ ਵੀ ਜਹਰ ਦਾ ਹੀ ਰੂਪ ਹੋ ਜਾਯੇਗਾ ਔਰ ਸ਼ਰੀਰ ਦਾ ਕਮ ਕੀ ਰਹ
ਜਾਯੇਗਾ ! ਸਾਰੀ ਤਾਕਤ ਲਗਾ ਕਰਕੇ, ਸਾਰੀ ਪ੍ਰਾਣ ਸ਼ਕਤਿ ਖਰੰ ਕਰਕੇ
ਇਸ ਜਹਰ ਨੂੰ ਸ਼ਰੀਰ ਦੇ ਵਿਚੋਂ ਬਾਹਰ ਕਢਣ ਦੇ ਵਿਚ ਉਸਦੀ ਹਸਤੀ
ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਯੇਗੀ ਏ ਹੀ ਹੋ ਰੇਹਾ ਹੈ ਕਿ ਅਥੀ ਜਨਮ ਤੋਂ ਲੈ ਕਰਕੇ
ਮੁਤ੍ਯੁ ਤਕ ਸਿਰਫ ਇਸੀ ਮਰਧਾ ਨੂੰ ਅਜ ਤਕ ਪਾਲਨ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕੇ
। ਧਾਨੀ ਕੇ ਸ਼ਰੀਰ ਦੀ ਮਰਧਾ ਦੇ ਵਿਚ ਹੀ ਨਹੀਂ ਆ ਕਰਕੇ ਸ਼ਰੀਰ ਦੀ
ਮਰਧਾ ਵਿਚ ਹੀ ਨਹੀਂ ਆ ਸਕੇ ਤੇ ਸਾਥ - ਸਾਂਗਤ ਜੀ ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਵੀ
ਕੋਈ ਮਰਧਾ ਹੋਯੇਗੀ । ਜੇਡਾ ਨਾਮ ਲੈ ਕਰਕੇ ਅਹੰਕਾਰ ਲਈ ਬੈਠੇ ਹਾਂ
। ਅਮ੃ਤ ਛਕ ਕਰਕੇ ਬੈਠੇ ਹਾਂ ਕਿਆ ਇਸਦੀ ਕੋਈ ਮਰਧਾ ਨਹੀਂ ਹੈਗੀ
? ਕਿਆ ਸਿਰਫ ਲਫਜਾਂ ਨੂੰ ਨਾਮ ਕੇਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ? ਧਾਨੀ ਕੇ ਏ ਲਫਜਾਂ
ਦੇ ਪਿਛੇ ਏ ਪਤਨਜਲਿ ਦਾ ਧੋਗ ਸੂਨ ਖੁਦ ਤਲਵਾਰ ਲੈ ਕਰਕੇ ਟੌਡਿਆ
ਚਲਾ ਆ ਰੇਹਾ ਹੈ ਅਗਰ ਇਸ ਤਲਵਾਰ ਰੂਪੀ ਡਰ ਨੂੰ ਅਥੀ ਧਾਰਣ ਕਰ
ਲਈਧੇ ਇਸ ਧੋਗ ਸੂਨ ਨੂੰ ਧਾਰਣ ਕਰ ਲਈਧੇ ਤੇ ਕੋਈ ਵਡੀ ਗਲ ਨਹੀਂ
ਹੈ ਕਿ ਏ ਲਫਜ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਵਾ ਦੇਣਗੇ ਕੋਈ ਸ਼ਕ ਨਹੀਂ ਹੈ ਸਾਥਨ
ਹੈ ਸਾਥਨ ਦੀ ਸੀਮਾ ਹੈ ਏ ਸ਼ਰੀਰ ਸਾਨੂੰ ਸਾਥਨ ਮਿਲਿਆ ਹੈ ਪਰ ਏਦੀ
ਵੀ ਸੀਮਾ ਹੈ ਏ ਸਚਖਣਡ ਇਸਨੇ ਕੋਈ ਵੀ ਨਹੀਂ ਜਾਣਾ ਹੈ ਇਸਨੇ ਏਥੇ

ਹੀ ਰਹਣਾਂ ਹੇ ਤੇ ਕਿਆ ਐ ਸਾਧਨ ਨਹੀਂ ਹੈਗਾ ਤੇ ਸਾਧਨ ਦੀ ਸੀਮਾ ਵੀ
ਹੈ ਠੀਕ ਉਸੇ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਸਤਿਗੁਰ ਇਕ ਸਾਧਨ ਹੈ । ਇਸ ਮੁਲਕ
ਦੇ ਵਿਚ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਨੇ ਕਮ ਕਰਨਾ ਹੈ ਸਾਧਨ ਦੇ ਜ਼ਰਿਏ ਯਾਨਿ
ਕੇ ਐ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਓ ਸੀਮਿਤ ਹੋ ਗਿਆ । ਓ ਅਪਾਰ ਹੈ ਅਪਾਰ ਦਾ
ਮਤਲਬ ਹੈ ਉਸ ਤੋਂ ਕੋਈ ਪਾਰ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ ਜੋ ਚਾਹੇ ਕਰ
ਸਕਦਾ ਹੈ । ਇਕ ਪਲਕ ਝਾਪਕਣ ਤੋਂ ਘਟ ਸਮੇਂ ਦੇ ਵਿਚ ਕਰੋੜਾਂ
ਹੀ ਉਤਪਤ ਔਰ ਕਰੋੜਾਂ ਹੀ ਪ੍ਰਲਾਯੋ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਐ ਤਾਕਤ ਵਾਲੇ
ਜੂਂ ਅਸੀਂ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਕਹਦੇਂ ਹਾਂ ਐ ਸਿਰਫ ਇਸਦਾ ਇਕ ਗੁਣ ਜੂਂ
ਬਿਧਾਨ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧੂਰਾ ਲਫਜ ਮਾਤਰ ਹੈ । ਯਾਨਿ ਕੇ ਇਤਨੀ ਸਮਰਥਾ
ਰਖਣ ਦੇ ਬਾਦ ਉਸ ਜੂਂ ਇਕ ਸ਼ਰੀਰ ਦੇ ਵਿਚ ਆ ਕਰਕੇ ਕਮ ਕਰਨਾ
ਪਿਆਂਗ ਤੇ ਕਿਆ ਓ ਸੀਮਿਤ ਹੋ ਜਾਂਗਾ । ਨਹੀਂ ਓ ਇਕ ਮਰਧਾ
ਦਿਤੀ ਗੁਰੂ ਹੈ ਮੁਲਕ ਦੀ ਕਿ ਇਕ ਇਨਸਾਨ ਜੂਂ ਕੌਣ ਪਢਾਯੇਗਾ
ਇਨਸਾਨ ਜੂਂ ਇਨਸਾਨ ਹੀ ਪਢਾਯੇਗਾ ਪਰ ਅਸੀਂ ਦੇਖ ਕੀ ਰਹੇ ਹਾਂ ਕਿ
ਪਢਾਨ ਵਾਲੇ ਇਨਸਾਨ ਉਸ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਤਾਕਤ ਜੂਂ ਭੁਲ ਜਾਂਦੇ
ਨੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਜੂਂ ਗੁਰੂ ਔਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਇਕ ਦਰਜੇ ਦੇ ਵਿਚ ਖੜਾ
ਕਰਕੇ ਉਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ competitor ਬਣਾ ਦੇਂਦੇ ਨੇ ਕੀ ਕਹਦੇਂ
ਨੇ ਸਚਖਣਡ ਕਿਥੇ ਹੈ ? ਕਹਦੇਂ ਨੇ ਜਿਥੇ ਗੁਰੂ ਰਹ ਰੇਹਾ ਹੈ ਭਾਈ ਜੇਡਾ
ਡੇਰਾ ਹੈਗਾ ਨਾ ਓ ਸਚਖਣਡ ਹੈ ਹੁਣ ਵਿਚਾਰ ਕਰਕੇ ਦੇਖ ਲੋ, ਗੁਰੂ
ਪਰਮਾਤਮਾ ਬਣ ਗਿਆ ਸਚਖਣਡ ਜੇਡਾ ਸੀਗਾ ਓ ਡੇਰਾ ਬਣ ਗਿਆ ਤੇ
ਰੁਹਾਂ ਕਿਥਰ ਜਾਣ ਗੀਆ ਸਾਧ - ਸਾਂਗਤ ਜੀ ਡੇਰੇਯਾਂ ਦੀਆਂ ਹੀ

चक्कर कटणगीआं हुण शरीरा दे दर्शन करके अकाल पुरुख
दे दर्शन कर लैणगीआं । हुण विचार करके देख लो किसने
परमात्मा अकाल पुरुख दा दीदार कीता । कोई उस शब्द तक
पहुंच सकया क्यों उसदा इको ही कारण सी कि अधूरा प्रचार
। असी समझ ही नहीं सके क्योंकि समझाण वालेयां ने इक
सीमा तों बाहर उस अकाल पुरुख दी दिती होई दात नूं
नाजायज रूप दे विच इस्तेमाल करना शुरु कर दिता इस
जगत दे विच । जदतकण ऐ गद्धियां लगदियां रहण गीआं,
जदतकण उन्हां दे ऊपर मूर्तियां सजदियां रहण गीआं इन्सान
रूपी देह दीआं ओर इस अकाल पुरुख दी ताकत नूं प्रचारित
रूप विच नहीं करन गीआं सही ढंग दे नाल नहीं सामणे
लिआणगें साथ - संगत जी ऐ झाड़ू लगा करके सब समेट
दितीयां जाण गीआं । ओ अकाल पुरुख आप अवतार लेगा
इस जगत दे विच और आपणे ढंग दे नाल प्रगट करेगा कि
किस नूं अकाल पुरुख केहा जांदा है और किस तरीके दे नाल
किस रस्ते ते चल के परमात्मा तक पहुंच सकदे हां उस वक्त
पता चलेगा कि गुरु किसनूं केहा जांदा है और अकाल पुरुख
किसनूं केहा जांदा है । पारब्रह्म ईश्वर सतिगुरु दे जेडे बचन
ने ओ इस शरीर नूं मान दिता गया है इक मर्यादा दिती गई है
पर जदों ऐ शरीर उस मान तों उस मर्यादा तों बाहर होण लग

जांदा है उस वक्त ऐ ताकत जेड़ी है ऐ आपणां कम करना बंद कर देंदी है विचार करके देख लो कितने ही मत चले कितने ही धर्म चले कितनियां ही गद्वियां चलियां अज सारीयां मिट्टी दे विच मिल चुकियां खाक हो चुकियां असी ठोकरा मारदे जादें हाँ । साडे पैरा दे थले कितनियां ही गद्वियां जेड़ियां ने दफन हो चुकियां ने उसदा कारण की है उसदा इको ही कारण है कि बैठण वाले मर्यादा तों बाहर हो गये ते ऐस वक्त वी घोर कलयुग दा समय चल रेहा है जितनियां वी ताकता अकाल पुरुख दीआं इस जगत दे विच दितियां गईयां सब ने आपणा - 2 पथ आपणा - 2 मत चलाया ओ जदतकण हुकम सीगा इक सीमा तक हुकम कम करेगा उस तों बाद ओ सारीयां चीजां जेड़ियां ने उस अकाल पुरुख ने आपणे आप दे विच समेट लैणियां ने ओ आप प्रगट हो करके इस जगत दे विच स्पष्ट करेगा कि किस नूं कहणा है । गुरु नानक साहब ने उस शब्द नूं गुरु कहा है “वाणी गुरु गुरु है वाणी ।” अगले वचन विच स्पष्ट करदे ने कि उस “परतखि गुरु निसतारे ।” परतखि गुरु दा की भाव है कि अकाल पुरुख दी जिस शरीर दे विच आ करके कम कर रही है उस दे कोलों असी साधन लैणा है ओ गुरु साधन है । नाम दिता गया साधन है ऐ साधना दी सब दी आपणी इक सीमा है अगर असी ऐ कहदें हाँ कि ओ अपार

है अनंत है ते साध - संगत जी विचार करके देख लो, ऐ शरीर
जिसनूं अस्यी गुरु समझ रहे हाँ ओ वी इस जगत विच रह
जायेगा और ऐ आत्मा जिस शरीर नूं लै कर के बैठी है ऐ शरीर
ऐ वी ऐथे छुट जायेगा ते शरीर नूं अस्यी किस तरीके दे नाल
गुरु कह सकदे हाँ । यानि के जिस करके आत्मा नूं मान
मिलया सम्मान मिलया ओ कारण की सींगा । ओ सींगा
सिरजनात्मक शक्ति आपणे इस कारण नूं इस अंग नूं उस
शरीर तों अलग कर दे ते साध - संगत जी जिसनूं अस्यी गुरु
कह रहे हाँ । जिस अहंकार दे विच ओ इस जगत दे विच
प्रचार कर रेहा है इक प्राणी मात्र रह जायेगा इक मामूली
इन्सान जेडा खुद आपणे शरीर दी वी भाल उस अकाल पुरुख
दी मर्जी दे बिना कर सकदा ते विचार करके देख लो कि नाम
किस नूं कहा गया है और जिस कारण दे नाल इस जीवात्मा
नूं मान मिलया है उस कारण दा शौक रखे बिना उसनूं भुले
बिना अस्यी कदी उस अकाल पुरुख परमात्मा दी बन्दगी नहीं
कर सकदे । उसदी भक्ति नहीं कर सकदे और जिसनूं अस्यी
कहदें हों सतिगुरु ऐ मेल कदी वी नहीं होयेगा । “नदरि करे ता
पाईए” उस अकाल पुरुख दी नदर होयेगी ते इस जगत दे विच
सानूं सतिगुरु दा मेल होयेगा यानि के इक साधन मिलेगा और
सतिगुरु दे जरिये जेडा साधन सानूं न मिलया अमृत मिलेगा

ऐ उन्हां दी आपणी मौज है कि किस ढंग दे नाल इस आत्मा
दा उद्धार करना चाहें ने समय युग दी जो जरुरत होंदी है
उस जरुरत नूं पूरा कीता जांदा है यानि के उसदा वी इक
साधन है सारे ही साधन ने साधना नूं अगर असी मजिल समझ
करके बैठे हां ते परमात्मा दा मेल नहीं होयेगा । डेरे मन्दिर
गुरुद्वारियां दे चक्कर लगदे रहणगें गद्वियां झाङ्डदे रहागें कूचियां
फेरदे रहागें बड़े - 2 उतम जन्म मिलणगें साध - संगत जी
स्वर्गा बैकुंठा दे विच लम्बिया उम्रा मिल जाण गीआं बड़े - 2
भोग करागें इतनिया लम्बिया उम्रा और उतम भोग ने कि
विचार वी नहीं कर सकदे । असी ऐथे कल्पना करके दस वी
नहीं सकदे और ऐ भोग असी तन और मन दे पिंजरे दे विच
रह करके करागें तां अकाल पुरुख दी आपणी जेडी बाणी है
ओ आपणे प्रति शौक पैदा करदी है न कि किसी गद्वी मत या
धर्म दे प्रति न किसी लफज या गुरु शरीर दे प्रति शौक पैदा
करदी है । गुरु नानक साहब ने सारी बाणी दे विच शब्द नूं
गुरु कहा है और आखिर दे विच गुरु कलगीधर पातशाह ने
उसी चीज नूं उसी दात नूं पंज भखदी जोतां दे विच करके बंद
कर दिता करण की सीगा क्योंकि उन्हां नूं पता सी आण वाला
समा (समय) शरीर रुपी गुरुआं दा इतनिया गद्विया चला
देणिया ने इतने मत और धर्म चला देणे ने कि आत्मा दा

कल्याण ही नहीं हो पायेगा आत्मा फैसला ही नहीं कर सकेगी
और असी वी की कर रहे हाँ पढ़े लिखे मूरख बणे होये हाँ भीड़
इकट्ठी होई है भीड़ दे पिछे टुरी जादें हाँ ऊंठ वाकण मुहं उते
चुकया । ऐ वी नहीं विचार करदे कि पहली भीड़ दा बणया की
(क्या) क्या सच्चाएं जा रहे ने या नरक दे विच ही बैठे होये
ने ते असी उस भीड़ दा हिस्सा बणे हाँ । भेड़ा दे बाड़े विच अग
लग जाये तुसी उन्हाँ नूं बचाण दी कोशिश करो मुङ - 2 ओथे
ही जादियाँ ने ओही हालत साड़ी है । असी जन्म तों ही ऐ
बेड़ियाँ आपणे पैर दे विच पा करके रखियाँ ने ऐ बेड़ियाँ केड़ियाँ
ने ! मत और धर्म दीआं जन्म तों ही पै जादियाँ ने सरदार दे
घर बच्चा होईया सरदार बणा दिता । हिन्दू दे घर हिन्दू ।
मुसलमान दे घर मुसलमान । ऐ सारे मत और धर्म जन्म तों
ही साडे पा दिते और जदों असी होश सम्भाली असी इन्हाँ विचों
निकलण दी कोशिश करनी सी असी कोई होर मत और धर्म
चला कर के इन्हाँ दे विच फंसण दा कम कर लेआ । यानि
के सारा मजमून जेड़ा सीगा इक फोकट दा विषय बण कर
के रह गया । “कहै प्रभ अवरु अवरु किछु कीजै, सभु बादि
सीगारु फोकट फोकटइआ ।” बिल्कुल स्पष्ट कहदे ने कि इस
वक्त परमात्मा अकाल पुरुख दी ताकत क्या उपदेश कर रही
है । “कहै नानक जिसनो आपि तुठा तिनि अंमृत गुर ते पाईआ

"जिसदे ऊपर अकाल पुरुख दी आपणी संतुष्टि हो जाये ।
प्रसन्नता हो जाये साध - संगत जी सतिगुरु सिर्फ उसी दा
हुकम लै इस जगत दे विच प्रगट होये जे । ऐ याद रखणा,
मत कोई समझणा कि भीड़ इकट्ठी होई है ऐ सचखण्ड जाण
वालेया'ं दी है कौवेया'ं दीआं भीड़ा नजर आंदिया ने हंसा दी
कतारा'ं किसे ने नहीं देखिया'ं कोई विरला ही हंस निकलदा है
ओ हंस केड़ा होंदा है जिस दे ऊपर अकाल पुरुख दी संतुष्टि
हो जांदी है उसदी संतुष्टि ही सतिगुरु दा इस साधन दे जरिये
सानूं प्राप्ति हो सकदी है याद रखणा सतिगुरु किसी नूं कुछ
नहीं देणगे कारण की है क्योंकि ओ जिस कारण दे नाल उन्हां
नूं महानता मिली है ओ उस कारण यानि हुकम दे विच बधे
होये ने और उसदे हुकम दी ही ओ पालना करनगे जितनिया'ं
मर्जी सिफारिशा'ं कर लो जितने मर्जी ही इस जगत दे विच आ
करके नीतिया'ं और गुट बणा'ं लो तुहानूं उन्हां कोलों काले -
चिट्ठे पास ते मिल जाणगे पर ग्रीन कार्ड कोई नहीं मिलना
क्योंकि ग्रीन कार्ड दी जेडी Sanction है ना ओदे ऊते जेडी
मोहर लगणी है ना ओ सिर्फ अकाल पुरुख दी लगदी है गुरु
दी वी जे नहीं लगदी । यानि के गुरु साधन दे रूप दे विच ही
अकाल पुरुख दी मोहर नूं इस जगत दे विच उस जीवात्मा दी
झोली दे विच तकसीम करदा जे । ऐ कोई गुरु दी निन्दया

नहीं है ऐ सारी साधनां दी सीमा नूँ प्रगट कीता जा रेहा है ।
कारण कि अस्यी ऐ सारेया नूँ अस्यीम समझ करके ऐदे विच
फंसी बैठे हां अस्यीम आत्मा है । ऐ शब्द अस्यीम है । अकाल
पुरुख अस्यीम है इन्हां तिन लफजां दे बगैर जो कुछ वी इस
जगत दे विच आ रेहा है ऐ सब सीमा दे विच है और सीमा दे
विच अस्यी रह करके आपणां कम करना है और अस्यी कम नूँ
करना कहदें ने सुरत दा शब्द दे नाल जुड़ना । इस जगत दे
विच ऐ आत्मा शरीर दे विचों निकलेगी किस तरह, फरियाद
आई है भई ऐदे विच किस ढंग दे नाल अस्यी कडागें ते ओ ढंग
केड़ा होणां चाहिदा । इस ढंग नूँ स्पष्ट कर रहे ने गुरु नानक
साहब बिल्कुल स्पष्ट गल है पंज ५ नाम नोट करा रहे ने इन्हां
नूँ पक्का करके धारण कर लो इन्हां पंजा नामां दे बिना छेवा
नाम कोई नहीं जे जेड़ा इस सुरत दा कल्याण कर सके विचार
करके देख लो । पहला नाम की है उस अकाल पुरुख दा
आपणां नाम है जिसनूँ अस्यी दयाल कह देईये, सतिनामु कह
देईये, कुछ वी कह देईये ओदे नाल कोई वी फर्क नहीं पै जांदा
। सिर्फ उस अकाल पुरुख दा हुक्म । यानि के उसदे पास
हुक्म है इस सुरत दे नाल सम्बन्ध रखण वाला । दूसरा हुक्म
केदे कोल है दूसरा हुक्म जिस दे कोल इस मुल्क दे विच
यानि के मृत लोक दे विच जिस जीवात्मा दे नाल ऐ ताकत

यानि के शब्द दा भण्डार प्रगट हो जांदा है उस दे कोल ऐ हुकम वी आ जांदा है यानि के गुरु ते बथेरे बण गये पर सतिगुरु कोई विरला है । सतिगुरु दा भाव है कि अकाल पुरुख दे हुकम नूं हासिल कर देणा और हुकम केड़ा हैगा है सुरत दे नाल सम्बन्ध रखण वाला । यानि के दूसरा नाम है सतिगुरु दा । हुण उसदे बाद तीसरा नाम केड़ा है तीसरा नाम है ब्रह्म दा ब्रह्म जिसने इस जगत दे विच उस अकाल पुरुख ने जिसनूं आपणा रूप दिता इक ऐसी आत्मा जिसने भक्ति कीती इतनी भक्ति कीती कि उस अकाल पुरुख दी प्रसन्नता नूं हासिल कीता प्रसन्न हो करके उसने उसनूं आपणा रूप । रूप की सींगा यानि के शब्द दी ताकत हुण शब्द वी अकाल पुरुख दे पास नहीं है ओ किथों आदा है ओ सिरजनात्मक शक्ति तों आदा है जो असल परमात्मा है सिरजनात्मक शक्ति है उसनूं ते आपां सारे ही भुली बैठे हां किसी नूं शौक ही नहीं हैगा उसी दे कोलों भण्डार जो है अकाल पुरुख दे पास आदा है और अकाल पुरुख दे जरिये ही ऐ सारी सृष्टि दा प्रचार कीता जांदा है । पसारा होंदा है और खत्म कीती जांदी है । यानि के जिसनूं उसने आपणा रूप दिता ओ है ब्रह्म अपार ताकत शब्द दी अकाल पुरुख ने उसनूं दिती है । पिछे सत्संग विच स्पष्ट कीता सी कि अपार ताकत दा ओ स्वामी ब्रह्म जो है असी सिर्फ ऐ

मुखौटा लगा करके इस मजमून नूं जो है हल नहीं कर सकदे। उस ताकत नूं लै करके ब्रह्म इस जगत दे विच सुरत दे नाल सम्बन्ध रखदा है उस दे बाद उस ब्रह्म ने इस सृष्टि दे तिन मुल्कां नूं चलाण वास्ते आपणां हुकम जेड़ा है तकसीम कीता है उस अकाल पुरुख दे उस हुकम नूं ही, उस ताकत नूं ही अगे जा करके यमराज नूं जिस नूं असी चित्रगुप्त वी कहदें हां उसदे अर्थीन कीती है यानि के सुरत दा जो सम्बन्ध है इस यमराज दे नाल वी है ऐ चार नाम हो गये और पंजवा नाम है उसदे आपणे तिन गुण ने कि जगत नूं बनाना, जगत दी सम्भाल करनी और जगत नूं खत्म करना और इसनूं इक विशेष मत वाले ब्रह्मा, बिस्न और महेश कहदें ने। यानि के इक सृष्टि बणा रेहा है, दूसरा उसनूं चला रेहा है, तीसरा उसनूं खत्म कर रेहा है गुरु नानक साहब आपणी बाणी विच स्पष्ट करदे ने। “एका माई जुगति विआई तिनि चैले परवाणु। इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु। जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै पुरमाणु। ओहु बेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु।” हुण कौण चला रेहा है कौण नजर नहीं आ रेहा है ऐथे अकाल पुरुख दी गल नहीं है ऐथे बिल्कुल स्पष्ट गल है ब्रह्म दी तरफ इशारा है ओ आपणे गुणां दे जरिये कम करदा होईया सब दे ऊपर यानि के हर जर्जे दे ऊपर नजर रख

करके बैठा है पर साड़ी नजर ओथे नहीं है असी अज तक ओथे
पहुंच नहीं सके । यानि के तिन गुणी रचना जेड़ी है ऐ सारी
रोगी है ऐ रोग दे विच ही असी सारे बैठे हाँ यानि के जिस घट
दे विच जिस शरीर दे विच जिस आत्मा दे नाल इस परमात्मा
यानि के ब्रह्म वी कोई परमात्मा तों घट नहीं है अपार ताकत
लै करके मौजूद है ते ऐ उसदी ताकत प्रगट हो गई है इस
जगत दे विच उसनूँ वी असी कह सकदे हाँ । इस जगत दे
विच 24 अवतार ब्रह्म दे इन्हाँ युगाँ दे विच मुख मने गये ने
पर ऐ रचना ते अनंत काल तों चल रही है इतने अवतार उस
ब्रह्म ने किते ने कोई नहीं जाणदा । यानि के उसदी ताकत
उसदा हुक्म जिस शरीर दे विच प्रगट हो गया उसनूँ असी
अवतार कह करके जाणदे हाँ उसदा वी सम्बन्ध जेड़ा है इस
सुरत दे नाल है ते कुल मिला करके ऐ पंज नाम हो जादे ने ।
इन्हाँ पंजा नामा नूँ जपण दे नाल अगर कोई कहै कि असी
कल्याण कर लवागें ते कढ़ी वी नहीं होयेगा पर ऐ पंजो नाम
दा असी खेल पहचाणण लई कि इस जगत दा खेल किस
तरीके दे नाल किस तरह ऐ रचना रचाई गई है किस तरह इस
रचना दे विचों असी निकल सकदे हाँ ते जरुरी गल है कि असी
इस रचना दे विचों निकलण दे कविल अवश्य बण जावागें ।
पर इक विशेष मत वाले क्या करदे ने ? औ कहदें ने इन्हाँ

पंजा नामा नूं जप लो तुहाडी मुक्ति हो जायेगी । हुण विचार करके देख लो इक मिसाल होर सतिगुरु दे रहे ने । इस जगत दे विच, विचार करके देख लो थाणेदार नूं क्यों रखया जांदा है यानि के ओ अपराधिया नूं पकड़े और सजा देवे और इस जगत दे विच यानि के आपणे मुहल्ले दे विच जिथे तक ओढ़ी सीमा है शाति दा प्रचार करे शाति होणी चाहिंदी है और उसदा इंचार्ज बणा करके थाणेदार बणा करके रखया जांदा है । उसे तरीके दे नाल ब्रह्म नूं इस जगत दे विच थाणेदार बणा करके रखया गया है हुण अगर कोई जीवात्मा पाप करदी है गल्त कम करदी है शाति नूं भंग करदी है ते क्या ओ थाणेदार उसनूं सिर्फ इस करके छोड़ देगा कि ओ उसदे नाम नूं जप रेहा है यानि के तुसी थाणेदार - 2 करदे रहो और लोगां दे गले वी कटदे रहों चोरीया वी करदे रहो ते क्या थाणेदार तुहाडे कोल हिसाब लये बिना, तुहाडे कोलों कीमत चुकाये बिना यानि के शाति कीते बिना मुल्क विचों, आपणी कालोनी विचों बाहर जाण देगा । विचार करो, खूब सोचो, ऐ ही वजह है कि असी न ते कदी इस मजमून ते विचार कीता है न कदी सोचेया है न कदी इसदे ढंग ऊपर चलण दी कोशिश कीती । यानि के ओ थाणेदार तुसी मर मिटो तुहानूं पार नहीं जाण देगा तुहानूं सजा देगा और जेडे दस नम्बरी होदें ने ओ कौण होंदे ने जेडे

कि निरंतर शाति नूँ भंग करदे ने उन्हाँ दी दस नम्बरी दी लिस्ट
बण जांदी है । उन्हाँ नूँ हुकम हो जांदा है कि सवेरे - शाम
थाणे दे विच आ करके मत्था टेको आपणी हाजिरी लगाओ
यानि के आपणे मुल्क विच शाति कायम रहे । ठीक उसे तरीके
दे नाल इसी मिसाल दे जरिये उस ब्रह्म ने वी है इस जगत दे
विच शाति रखण वास्ते उस परमात्मा दे अकाल पुरुख दे हुकम
नूँ चलाण वास्ते इस जगत दे विच जो है कुछ नियम बणाँ
दिते प्राण शक्ति दे दिती यानि के उसदे नाल ही जो है शरीर
दिता है ऐ शरीर किस दी देन है ऐ शरीर उस ब्रह्म दी देन है ऐ
सारे 84 लख पिंजरे जेडे बणाये ने ऐ किस लई इसी लई बणाये
गये ने कि जेडी जीवात्मा शाति नूँ भंग करदी है हुकम दे विच
नहीं आंदी उसनूँ इन्हाँ पिंजरेया दे विच रख करके कैदी बणा
करके मजमून रूपी कर्ज दिता जांदा है कि आपणी कीमत
चुकाओ । जदतकण कीमत नहीं चुकाओगे पिंजरे तों पार नहीं
जा सकदे । ते क्या असी राम - राम करके या ब्रह्म - ब्रह्म
करके ब्रह्म दे हजाराँ ही नाम ने, अनगिनत नाम ने जिस तरह
परमात्मा दा अनामी है उसी तरह ब्रह्म दा वी अनामी है जितने
मर्जी नामाँ नाल पुकार लो पर क्या हर जर्ए ते नजर रख के
नहीं बैठा ओ विशेष नाम दे नाल कहोगे निरंजन पद जेडा है
इस ब्रह्म दे लई वी आया है और अकाल पुरुख लई वी आया

है । तुसी भ्रम दे विच फंस जाओगे फैसला ही नहीं कर सकदे कि निरंजन कौण है ! निरंजन लफज दा अर्थ है माया तो रहित ओ माया दे जरिये सृष्टि चला रेहा है ते आप माया तो परे है उसी नूँ ब्रह्म कहा गया है और ओ अकाल पुरुख जेड़ा है सारी सृष्टि चला रेहा है ऐहो जे अनगिनत ब्रह्म जेड़े ने ऐदे अर्थीन कम कर रहे ने और आप सब तों निर्लिप्त है। कड लो अर्थ क्या कडोगे निरंजन दा अर्थ ही नहीं कड सकदे तुसी यानि के फैसला ही नहीं कर सकदे कि असी अकाल पुरुख नूँ जप रहे या ब्रह्म नूँ जप रहे हाँ । यानि के सारे भ्रम इस जगत दे विच फैलाये जा रहे ने कारण की है अधूरे मतां दा प्रचार अधूरी क्रिया जेड़ी है दिती जा रही है यानि के खेल नूँ किसी ने समझाण दी कोशिश ही नहीं कीती । शरीर दी मर्यादा विच आण लई किसी नूँ समझाया नहीं गया कि जदतकण तुसी शरीर दे विच नहीं आओगे मर्यादा दे विच नहीं आओगे । हुक्म विच नहीं आओगें, शरीर तों कम ही नहीं लै सकदे । ऐ शरीर रोगी हो गया ते कंचन जैसी काया किस कम दी यानि के ऐ कितना ही सुन्दर शरीर होवे इन्द्रियां कितनियां ही प्रबल होण । साध - संगत जी ऐ सार सिआणत, सारी सुन्दरता, सारा बल किसे कम दा नहीं अगर इसनूँ रोग लग गया । ऐ रोग वर्णी दीमक जेड़ी है ऐ शौर्य नूँ बल नूँ खा जांदी है । यानि के शरीर

ही मिट्टी दी ढेरी हो जायेगा । जीदें जागदे असी जगत विच
देखदे हाँ जेडे अपंग ने किस तरीके नाल आपणां कार -
व्यवहार कर रहे ने भजन बंदगी कर लैणगे ! परमात्मा नूं
मिलण दी कोशिश कर सकदे ने ! चाह करके वी नहीं कर
सकदे क्यों अधूरापन है इस शरीर दे विच । यानि के साधन
दी मर्यादा ही नहीं अज तक किसी नूं समझाई गई । सिर्फ
इको ही गल समझा दिती कि भाई तुसी अमृत पी लो और ऐ
जो मर्यादा जेडी हैगी है इक दो चार गलां समा दितिया । भई
तुहाडा कल्याण हो जायेगा बहुत होईया साल छह महीने बाद
आ करके इक सत्संग कर दिता । साथ - संगत जी जरा
विचार करके देख लो, गुरु नानक साहब ने जेडी लंगर दी प्रथा
दिती सी ना उस वक्त लंगर दी प्रथा दी जरुरत सी क्यों जरुरत
सी ऐ जो मुल्क है बहुत तकसीम सीगा छोटे - 2 रियासतां दे
विच बंडया होईया सी छोटी - 2 रियासतां दा भाव है कि असी
खाणे वास्ते, भोजन वास्ते, रहण वास्ते shelter दी यानि के
आश्रय दी जरुरत है और आश्रय कौण देगा ! आश्रय देण वाला
कोई है ही नहीं सीगा । ते गुरु नानक साहब ने ऐ धर्म शाला
बणा करके लंगर दी प्रथा दिती फ्री भोजन दी ओदा मकसद
इक सी कि जेडी संगत आवे या जेडे साधु - संत प्रचार करन
वास्ते आंदे ने सानू ऐ शरीर रूपी साधन जरुरत है ऐ shelter

दी जरुरत है भोजन दी जरुरत है और उसदा प्रचार हो सके और उन्हांने इसदा प्रचार कायम कीता पर अज विचार करके देख लो लखां दे भोजन दा इंतजाम कीता जांदा है बेशक कहा जांदा है उसदे हुक्म विच है । पर थोड़ा जेआ विचार सानूं वी कर लैणां चाहिदा पौणे घटे दे सत्संग वास्ते सारा साल आपणे ही भैणा - भरावा जेडे गुरु दे शिष्य हो गये आपणे भैण - भरा होये उन्हां दी इज्जत दे ऊते डाका डालदे ने तुहानूं असी ऐथे बैठ करके दस वी नहीं सकदे । साध - संगत जी ऐ सच्चाई है उस सच्चाई नूं जा करके देखो ते सही । विचार तां करो क्या ओथे आत्मा दा कल्याण कीता जा रेहा है कि आपणे ही भैणा - भरावा दी इज्जत जेडी है खतरे दे विच पाई जा रही है । सिर्फ पौणे घटे दा सत्संग है साल दे विच और विचार करके देख लो क्या पौणे घटे असी भुखे नहीं रह सकदे । ते क्या असी प्रसादि दी कीमत नहीं समझे प्रसादि किस नूं कहा जांदा ! जेडा सतिगुरु जी दे हथों लग करके आयेगा क्या सिर्फ ओ ही प्रसाद है । क्या अकाल पुरुख दी देन इस जगत दे विच ऐ पाणी दी बूंद, ऐ हवा, ऐ की है ! ते क्या ऐ उस अकाल पुरुख दा प्रसादि नहीं है । इस पाणी दी बूंद दे बिना असी कितने घटे रह सकदे हां कुछ घटे उसदे बाद सानू मरना पयेगा । उसदे बाद हवा दे बिना, हवा दे बिना असी कुछे घटे की कुछ घड़ियां

वी नहीं रह सकदे, ते क्या ऐ परमात्मा दा प्रसादि नहीं है इस परमात्मा दे दिते होये प्रसादि । ऐ प्राण शक्ति, क्या परमात्मा दा प्रसादि नहीं है इसदी निन्दया करके इसदी मर्यादा तों बाहर हो करके साथ - संगत जी ऐ सारे प्रसादि जेडे ने ना ऐथे ही रहणगें कुछ नहीं बणेगा इस आत्मा दा वाला तों पकड़ करके इसनूं घसीट करके ले जाया जायेगा और ऐदी पत जेडी है निकम्मी हो जायेगी बिल्कुल राज करन वास्ते आई सी इस मुल्क दे विच यानि कि सिरजनात्मक शक्ति दा अंश है अनंत गुणां दी स्वामिनी है । इस वक्त इसदी हालत की होई है उसदा कारण की है ! उसदा इको ही कारण है कि ऐ आत्मा सो रही है जागी नहीं हां जद तकण ऐ जागेगी नहीं तदतकण ऐ परमात्मा नूं मिलण दे आपणे कल्याण करन दे काबिल बण ही नहीं सकदी । ते सारा मजमून जेडा है किसी ने समझाया अज तक, किसी ने नहीं समझाया, किसी ने दस्या ही नहीं यानि के इक डर जेआ बैठ गया कि अगर अस्यी इस लकीर तों बाहर जावांगें धर्म तों बाहर कड़ दिते जावांगें । समाज वाले क्या कहणगें बाहर वाले क्या कहणगें । हिन्दुस्तान दी हालत की सी जिस वेले गुरु नानक साहब ने अवतार लेआ गुरु नानक साहब इक आत्मा ऐसी सी जिसने उस अकाल पुरुख दी ताकत नूं प्रगट कीता उसदी वी सीमा सी पर ओ अकाल पुरुख नहीं

हो गया और सारी बाणी दे विच गुरु नानक साहब ने आपणे
आप नूं “कह नानक हम नीच करमा सरणि परे की राखहु
सरमा ।” आपणे आप नूं नीचा तों नीच कहा किसी नूं वी गुरु
परमात्मा नहीं कहा कि मैं सतिगुर हूं मैं गुरु हूं उन्हां दी सारी
बाणी पढ़ करके देख लो । शब्द शुरु होंदा है इक अकाल -
पुरुख दी बन्दगी तों और विच या आखिर दे विच आ करके
ओ गुरु साधन दे रूप दे विच प्रगट करदे ने कि गुरु साधन है
गुरु दे कोल जा करके ओदा साधन लै लो जो साधन दसदे ने
आपणी निजी जिन्दगी दे विच अमली जामा पहनाओ ऐथे हो
कि रहा है डेरे, मन्दिर गुरुद्वारेयां दे चक्कर कटे जा रहे ने क्यों
? क्या ओदे नाल कल्याण हो जायेगा ? इसदा ते सिधा जेआ
मतलब ऐ ही है कि ऐ आपणे आप नूं परमात्मा सिद्ध कर रहे
ने अगर ऐ परमात्मा सिद्ध कर देण कि परमात्मा तुहाडे अन्दर
है आपणे आप नूं विचों कड़ लैण ते साध - संगत जी साधन
वी सार्थक हो जायेगा और आण वाली आत्मा दा कल्याण वी
हो जायेगा पर ओ जद तक पासे कह रहे ने बेशक प्रत्यक्ष रूप
विच असी गुरु नहीं हां पर उस गद्दी तों उठण दे बाद सारा कुछ
ओ ही करदे ने जो कुछ प्रचार कीता गया सींगा । क्या सुणन
वाली आत्मा बेवकूफ ने ओ आपणे आप ही भ्रम विच फंस
जाण गीआं यानि कि डेरा सचखण्ड बण गया गुरु परमात्मा

बण गया न अकाल पुरुख दी बंदगी न अकाल पुरुख दा शौक
ते साध - संगत जी ऐ कितने दिन चलण गीआं उस अकाल
पुरुख दी ताकत ओ जिस वेले खिच लेगा जिस कारण ऐ
महानता मिली सी ओ कारण खिच लेआ जायेगा जदों ऐ कारण
खिच लेआ जायेगा साध - संगत जी किसे ने तुहानूं नहीं
पुछणा । विचार करके देख लो और जिसने अकाल पुरुख दा
शौक पैदा कर लेआ, परमात्मा नूं मिलना चाहदां हे ते ऐ साधन
वी ओ आप ही मिलांदा है ओ आप ही “नदरि करे ते पाईऐ
सतिनामु गुणतास ।” गुणां दा भण्डार ओ नदर करे ते प्राप्त
होंदा है ओ नदर कदों होयेगी जदों तुहाडा शौक होयेगा ।
पिछले जन्मां दे विच अगर असी कोई ऐसी क्रिया कीती होयेगी
असी परमात्मा नूं मिलना चाहदें हां आत्मा दा कल्याण करना
चाहदें हां ते ऐ जरुरी गल है कि ओ अकाल पुरुख परमात्मा
सानूं किसी सतिगुरु दे कोल वी लै जायेगा किसी न किसी ऐसे
साधन दे नाल वी जोड़ देगा कि साडा कल्याण हो सके यानि
क्या ओ अंतर दे विच बैठ करके कम नहीं कर सकदा कितनी
अजीब गल है कि ओ अकाल - पुरुख परमात्मा जड़ चेतन नूं
आधार देण वाला सब नूं देंदा है रिजक पर सब तों निर्लिप्त
रहदां है सब तों अलग रहदां है उसदे बाद वी असी उसनूं इक
कैदी दे रूप विच देखणां चाहदें हां ते साडा उसदे प्रति शौक

किस तरह पैदा हो जायेगा । हुण इक बच्चा है बच्चे नूं तुसी
लुभाणां चाहो ते उसनूं कहो कि इक खिलौणां है बड़ा सुन्दर है
बड़ा आला है बड़ा अच्छा नचदा है बच्चे दा ध्यान उस पासे
जायेगा ही नहीं । अगर ओ खिलौणां चाबी भर के उस्दे सामणे
रख देझ्ये ते ओ नचणा टपणां ते बच्चे दा ध्यान उस पासे
चला जायेगा आत्मा जेड़ी कि बच्चे तों वी निचे स्तर ते इस
वक्त मौजूद है ध्यान अकाल पुरुख दे नाल जोड़ रहे हां या
आपणे नाल जोड़ रहे हां ! विचार कर के देखो असी आपणे
नाल जोड़न दी कोशिश कर रहे हां और असी कौण हैगे हां ।
असी शरीर हैगे हां असी आपणे आप नूं आत्मा या परमात्मा
ओ ते परले मण्डलां दे विच जा करके पता चलेगा न कि क्या
वा इस मण्डल दे विच ते असी शरीर ही बैठे हां ना ते असी
शरीर दे नाल ही जोड़ रहे हां अकाल पुरुख दे नाल नहीं जोड़
रहे गुरु नानक साहब दी सारी बाणी अकाल पुरुख दे नाल
जुड़न दा शौक पैदा करदी है ते शौक केदा पैदा होयेगा जेदा
प्रचार कीता जायेगा जट असी आपणे आप नूं ही परमात्मा
सिद्ध करन विच लगे होये हां कि असी परमात्मा हैगे हां ते
आण वाले जीव दा शौक केदा पैदा होयेगा तुहाडा ही शौक
पैदा होयेगा तुहाडा ही ध्यान करेगा तुहाडा ही ध्यान करेगा ते
फिर बणेगा की (क्या) ! यानि के अकाल पुरुख दे मजमून

नूं असी समझ ही नहीं सके न विचार कर सके अधूरे ढंग
अपना करके असी ऐ सारीयां रुहां नूं इस अंधे खूह दे विच
धकेलन दे पापी हैंगे हां ऐ सारे पाप दा भुगतान सानूं किस
तरह करना पैंदा है कि ऐ ताकत जेड़ी है सानूं इस वक्त मिल
रही है ऐ खिंच लई जायेगी यानि के इस जगत दे विच आ
करके असी इस जगह बैठे हां ऐथे वी अगर असी विचार करके
दखिये ते सारीयां ही क्रियां उसे ढंग नाल चल रहियां ने । इक
पासे असी कहदें हां कि जड़ चेतन लोक दे विच परमात्मा
मौजूद है और दूसरे पासे कहदें हां कि जड़ दी पूजा नहीं करनी
चाहिदी ते क्या ऐथे आ के असी मत्था टेकटे हां ते क्या जड़
दी जगह चेतन नूं मत्था टेक रहे हां किसी दे अन्दर भाव है मै
राम कहा है ईटा और मिट्टी दा पिठू बण गया है चिराग की ने
चिरागां दे अन्दर तेल खत्म हो जायेगा चिराग बुझ जाणगें
जिस चिराग दी गल कीती गई है जिस रोशनी दी गल कीती
गई है । जिस शब्द दी गल कीती गई है क्या ओदे विचार साडे
अन्दर आदें ने कटी वी नहीं आदें फोटूयां दे विच चरण पकड़
के हिलाये जा रहे ने कि असी आ गये हां क्या ऐ मत सिखाई
गई सी कारण की है कि गुरुआं ने आपणे आप नूं परमात्मा
सिद्ध करन दी कोशिश कीती उस अकाल पुरुख दी जगह जिस
वेले उन्हां ने आपणे आप नूं रख लिता मिडिएटर दी जगह

आपणे आप नूं बणा लिता ते कितने ही ऐसे मत और धर्म चले
ने जितने खाक दे विच मिल गये ने कितनेयां ने नाम जपाये
नामां तक यानि लफजां तक ही रह गये यानि के परमात्मा दे
उस शब्द नूं न कोई जप सकया क्यों क्योंकि ओ अजपा है
ओ ते आत्मा दा विषय है ते फिर ऐ की है असी ऐथे आ के
मत्था टेकदे हां फोटूया ने तस्वीरां ने जानकारी वास्ते बोध
वास्ते ज्ञान वास्ते यानि के इक सोमा है अकाल पुरुख ते हर
जर्रे दे विच है क्या जङ्ग है क्या चेतन है असी उस अकाल
पुरुख नूं अगर आपणे सामणे रख करके मत्था टेकिये ते असी
इन्हां साधनां कोलों वी कम लै सकदे हां इक जगह बणाई गई
है इक गुरुद्वारा बणाया है इक मन्दिर बणाया है इक मूर्तियां
ने इक पत्थर ने है ते पत्थर ही ने पर जदों असी इस विचार दे
नाल जाईये कि असी ऐथे बैठ कर के उस अकाल पुरुख
परमात्मा दी बन्दगी करनी है ओथे तक पहुंचण लई उपाय
करना है ते साध - संगत जी ऐ सारीयां जङ्ग वस्तुयां साधन दे
रूप विच साडा कम कर देंदियां ने अगर असी साधनां तक
सीमित रह जावांगे ते जङ्ग पत्थर जितने ने विचार कर के देख
लो पाणी विच पाकर के देख लो अगर मूर्ति पत्थर दी झूब
जायेगी ते क्या मेहराब नहीं झुबेगी चिराग नहीं झुबणगें अगर
ऐ खुद ही झूब जाणगें ते सानूं किथों तार देणगें । ऐसी खुली

बाणी इस जगत दे विच किसी ने प्रचलित नहीं कीती । ऐ अकाल पुरुख दी आपणी ताकत है आपणी बाणी है कि उन्हां ने दया मेहर करके साडी झोलियां विच इतनी सच्चाई तकसीम कर दिती कि इस गद्दी ते बैठ कर के कोई माई का लाल सच वी नहीं बोलणा चाहदा । बोल सकदा ही नहीं क्योंकि उसदे अन्दर ताकत ही नहीं है ताकत किसदी होंदी है अकाल - पुरुख दी ते ऐ सारे साधन ने अगर असी साधना तक सीमित रहिये तस्वीर किस वास्ते है जानकारी वास्ते । जानकारी तों अगे अगर असी उन्हां नूँ धूप बती देणा शुरु कर दवाँगे ते साध संगत जी इक character है तस्वीर दा की (क्या) कि दीवार नूँ नहीं जे छडदी ओ दीवार नूँ नहीं छडदी ते सानूँ इस देह विचों निकलण दे काबिल बणा देगी ते ओ अकाल पुरुख दी ताकत जड़ और चेतन सभ नूँ आधार देण वाली जिस ढंग दे नाल चाहे इस आत्मा दा कल्याण करन दे काबिल बणा सकदी है और अन्दर बैठ करके ओ ताकत कम करदी वी है बशर्ते अगर असी परमात्मा नूँ मिलण दा शौक रखिये अगर शौक साडा शरीर तक सीमित है डेरे मन्दिर गुरुद्वारेयां तक सीमित है ते याद रखणा असी इस मुल्क विच नहीं ते अगले मुल्का विच चले जावाँगे । यानि के स्वर्गा बैकुंठा विच लम्बियां उम्मा ते मिल जाण गीआं पर कदे वी इस आत्मा दा कल्याण करन

ਦੇ ਕਾਬਿਲ ਨਹੀਂ ਬਣ ਪਾਵਾਂਗੇ । ਤਾਂ ਸਾਥ - ਸ਼ੰਗਤ ਜੀ ਏ ਜਿਤਨੀ ਵਾਣੀ ਹੈ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਬ ਦੀ ਏ ਸਾਰੀ ਉਸ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੇ ਪ੍ਰਤਿ ਸ਼ੌਕ ਪੈਦਾ ਕਰਦੀ ਹੈ ਔਰ ਬਿਨਾ ਸ਼ੌਕ ਦੇ ਅਖੀ ਇਸ ਖੁਰਤ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਧੋਗ ਨੂੰ ਕਦੀ ਹਾਸਿਲ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ । ਸ਼ੌਕ ਤੇ ਹੈ ਸਾਡਾ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਔਰ ਅਖੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ ਚਾਹਦੇਂ ਹਾਂ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਨੂੰ । ਏ ਤੇ ਕਲਪਨਾ ਦਾ ਹੀ ਵਿ਷ਯ ਹੋ ਗਿਆ ਕਦੀ ਸਾਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਕੁਛ ਵੀ ਨਹੀਂ ਜੇ ਹੋਣ ਲਗੀ ਧਾਨੀ ਕੇ ਸ਼ੌਕ ਹੀ ਹੈ ਇਸ ਜੀਵਾਤਮਾ ਨੂੰ ਜਨਮ ਲੈਣ ਵਾਸਤੇ ਮਜ਼ਬੂਰ ਕਰ ਦੇਂਦਾ ਹੈ । ਧਾਦ ਰਖਣਾ ਉਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਅਕਾਲ - ਪੁਰਖ ਦਾ ਇਕ character ਹੈ ਇਕ ਗੁਣ ਹੈ ਅਗਰ ਏ ਜੀਵਾਤਮਾ ਇੱਕ ਵੀ ਗੁਣ ਲੈਕਰ ਕੇ ਬੈਠੀ ਹੈ ਕੇਡਾ ਗੁਣ ! ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਸੰਸਾਰ ਰੂਪੀ ਇਕ ਗੁਣ ਨੂੰ ਵੀ ਲੈ ਕਰਕੇ ਏ ਜੀਵਾਤਮਾ ਕਦੇ ਵੀ ਪਾਰ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦੀ । ਧਾਨੀ ਕੇ ਸ਼ਬਦ ਜੇਡਾ ਹੈ ਨਾ ਓ ਇਤਨਾ ਸ਼ਰਮਲੁ ਹੈ, ਇਤਨਾ ਹੀ ਨਾਜੁਕ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਆਤਮਾ ਦੇ ਸਿਵਾਯ ਹੋਰ ਕਿਸੀ ਦੇ ਵੀ ਬੋਝ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਚੁਕ ਸਕਦਾ । ਧਾਨੀ ਇਕ ਵੀ ਇਚਥਾ ਏ ਆਤਮਾ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਲੈ ਕਰਕੇ ਬੈਠੀ ਹੈ ਤੇ ਜਿਤਨੇ ਮੰਜ਼ੀ ਭੇਟੇ, ਮਨਿਦਰ, ਗੁਰੂਦੁਆਰੇ, ਨਾਮ, ਅਮ੃ਤ ਲੈ ਲਵੇ ਚਕਕਰ ਕਟਦੀ ਰਵੈ ਕਰੋਡਾਂ ਨਹੀਂ ਅਨੰਤ ਜਨਮ ਤਕ ਇਸ ਆਤਮਾ ਦਾ ਕਲਿਆਣ ਨਹੀਂ ਹੋਯੇਗਾ । ਏ ਸ਼ਬਦ ਕਦੀ ਵੀ ਇਸ ਆਤਮਾ ਨੂੰ ਸਚਖਣਡ ਲੈ ਜਾਣ ਦੀ ਸਮਰਥਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ । ਕਾਰਣ ਕੀ ਹੈ ਕਿ ਉਸਨੂੰ ਹੁਕਮ ਹੈ ਕਿ ਆਤਮਾ ਦੇ ਸਿਵਾਯ ਕੋਈ ਇਚਥਾ ਲੈ ਕਰਕੇ ਨਹੀਂ ਆਣੀ ਤੇ ਹੁਣ ਵਿਚਾਰ ਕਰਕੇ ਦੇਖ ਲੋ

असी किनियां इच्छा लै करके बैठे हां कितनी कामना लै करके
बैठे हां और ऐ सारीयां ही कामनां जेडियां ने मजबूर कर देण
गीआं इस जगत दे विच जन्म लैण वास्ते जन्म और मरण दा
84 लख दा जेडा गेड़ है इस तों निकलण दे काबिल नहीं बणन
देण गीआं और काबिल कदों बणेगी जदों ऐ आपणे शौक नूं
पैदा करेगी । परमात्मा दे मिलण वास्ते अकाल पुरुख दे मिलण
वास्ते और अकाल पुरुख दा प्रचार करन वास्ते इस जगत दे
विच जितनियां वी रुहां भेजियां गईयां जितनियां वी आईया
सब ने आपणा मत और धर्म चलाया । ओदे बाट कदी वी असी
इस आत्मा दा कल्याण कर ही नहीं सकदे ते गुरु कलगीधर
पातशाह आपणे आप नूं की कहदें ने “जे हमको परमेश्वर
उचरहि ते सभ नरकि कुँड महि परिहै । मो को दास तबनु का
जानो । या मै भैद न र्ख पछानो । मै हो परम पुरुख को दासा
। देखनि आयो जगत तमासा ।” ऐ दसवीं जोत सी गुरु नानक
साहब दी ताकत दी उस अकाल पुरुख दी जिन्हां ने अकाल
पुरुख दा ही प्रचार कीता और पहले बचन विच ही स्पष्ट कर
दिता आपणी आत्म - कथा दे विच कि जेडे मैनूं परमात्मा कह
करके इस जगत दे विच याद करनगें ना साथ - संगत जी
उन्हां ने वर दिता है, की वर दिता है कि इस जगत दे विच
नरकां दे द्वार उन्हां वास्ते हमेशा ही खुले रहणगें । जिस तरह

बाबा जी ने कह दिता ना कि सानू महाराज कह दोगे ते तुहाडा
भजन ही खादा जायेगा । उसे तरीके दे नाल कलगीधर
पातशाह ने वी कह दिता कि अगर तुसी मैनूं परमात्मा कह कर
के याद करोगे । कारण की सीगा क्यों कि उन्हां नूं पता सी
कि देह जेड़ी है इक सीमा तक कम कर सकदी है उस तों अगे
नहीं क्योंकि मन वी मौजूद है जदों ओ ताकत अकाल - पुरुख
दी चली जायेगी मन आपणा हुकम चलायेगा दितियां होईयां
छ्यूटियां दे नाजायज फायदे चुकेगा कई धड़कदी छातियां दे
ऊपर पैर रखदा होईया ओ जीव चला जायेगा । ते साथ -
संगत जी ओ कल्याण नहीं होयेगा ओ कल्याण ते की करना
है इक ऐसी दल - दल खड़ी करके जायेगा जिस दे विच
जितनियां वी रुहां भीड़ दी भीड़ आ करके स्वाह हो जाण गीआं
और ऐही कारण है कि असी आपणी आत्मा दा कल्याण नहीं
कर सके । ते आपणे आप नूं गुरु नानक साहब ने नीचा तों
नीच कहा और कलगीधर पातशाह ने पंज भखदियां जोता
“पूर्ण जोत जगे घटि महि तो खालिस तों नाखालिस जाणे ।”
उन्हां ने खालसा किस नूं कहा है जिस दे अन्दर जोत प्रगट है
। आवाज प्रगट है उसदे नाल मिलया होये और ऐसियां वी पंज
जोता प्रगट होण गीआं ते साथ - संगत जी वरदान देंदे ने कि
अकाल पुरुख ताकत जेड़ी है आप बैठ कर के कम करेगी हुण

ऐसिया ' पंज ताकता' इकट्ठीया ' कर लो अगर गुरु दी पदवी दा
उपाध करना चाहें हो ते बाकी सारीया ' ही गला ' बेशक
सचखण्ड दीआं होण । बेशक पारब्रह्म दीआं होण बेशक ब्रह्म
दीआं हुण सब आपणी - 2 सीमा दे विच इक निश्चित सीमा
तक ही कम करेगी पर आत्मा दा कल्याण नहीं होयेगा क्यों
आत्मा नूं जेड़ा कल्याण करन वास्ते ग्रीन कार्ड मिलदा है ऐ
अकाल पुरुख दी देन है और अकाल पुरुख दे प्रति शौक पैदा
करवान वाले ही इस जगत दे विच आत्मा दा रस्ता प्रशस्त कर
सकदे ने होर कोई कारण है ही नहीं और असी जितने वी
कारण बणा ' करके बैठे हाँ ऐ सारे अधूरे ने और ऐ अधूरे प्रचार
दे नाल कटी वी आत्मा दा कल्याण नहीं हो सकदा । अज दे
शब्द दे विच गुरु नानक साहब ने बिल्कुल स्पष्ट कीता है कि
ऐ जेड़ी चीज है सुरत शब्द दा योग । अगले सत्संग दे विच
इसी दे अगले मजमून नूं बाकी दे हिस्से नूं गुरु नानक साहब
दे शब्द दे जरिये गुरु साहब प्रगट करनगें । ते अज दी वाणी
दे विच बिल्कुल स्पष्ट कर दिता है कि जितने वी साधन सानूं
मिले ने आत्मा दे कल्याण वास्ते ऐ सब आपणा ' अर्थ रखदे ने
ऐदी वी इक सीमा है । इक सीमा दे विच, मर्यादा दे विच आ
करके असी बहुत कुछ हासिल कर सकदे हाँ और आपणी
आत्मा दा कल्याण करन दे काबिल वी बण सकदे हाँ ऐ जन्म

जन्मांतर दी चली होई क्रिया है कोई इक जन्म विच हल नहीं
हो जांदी ते असी पढ़े लिखे मूरख बणी बैठे हाँ अगर असी
विचार कर के देख लईये अच्छे ढंग दे नाल खूब सोचिये खूब
विचारिये कि किस ढंग दे नाल आत्मा दा कल्याण हो सकदा
है और किस रस्ते नूँ असी अपनाणा है वैसे असी आपणे जगत
दे विच कितने सियाणे हाँ स्वार्थ नूँ हासिल करन वास्ते
कितनिया गला करदे हाँ पर अगर असी उस परमार्थ नूँ हासिल
करन वास्ते इस जगत दे विच खूब विचार करिये खूब सोच
करिये ते असी ऐ सारे अधूरे मत और धर्म जेडे चलाये जा रहे
ने उन्हाँ तों असी बच सकदे हाँ और जिथे पूर्ण सतिगुरु मौजूद
ने जेडा साधन और रस्ता ओ देंदे ने ओ साधन नूँ लै करके
आपणी निजी जिन्दगी दे विच अमली जामा पहना देईये । ते
साध - संगत जो अवश्य आत्मा दा कल्याण हो जायेगा । याद
रखणा न ते पढ़न वाला पार जांदा है न सुणन वाला पार जांदा
है ते ऐदा ऐ मतलब नहीं है पढ़ना और सुणना नहीं है पढ़ना
और सुणना आत्मा दे कल्याण दा इक अंग मात्र है यानि के
पढ़ागें नहीं सुणागें नहीं ते रस्ते ते चलागें किस तरह ते चलण
वाले दा कल्याण है पढ़न या खाली सुणन वाले दा कदी वी
अज तक कल्याण नहीं होईया और ऐ क्रिया असी इस जन्म
विच नहीं पिछले अनंत जन्माँ दे विच अपना चुके हाँ पर साडे

फेल होण दा कारण की सींगा कि असी कट्टी वी इस बाणी दे
ऊपर अमल नहीं कीता ओ बाणी आद तों चली आ रही है सिर्फ
लफजां दा ही फेर है भाव इको ही होंदा है उस अकाल पुरुख
परमात्मा दी बन्दगी और जितने वी इस जगत दे विच मत और
धर्म बण जादें ने ओ सिर्फ फंसाण दा ही कम करदे ने तारण
दा नहीं । जेड़ा पूर्ण सतिगुरु होयेगा कट्टी डेरेयां दे चक्कर नहीं
जे कटवायेगा ओने ते इक गल कह देणी है भाई आपणे आप
नूं निर्मल कर लै । इक परमात्मा नूं मिलण दा शौक, प्रबल
इच्छा और अंतकरण दा शुद्ध होणा ऐ नचिकेता ने यम नूं
उपदेश दिता सी यानि के जेड़े पंज नाम गुरु साहबां ने दिते ने
ना इन्हां नूं सिर्फ जपण दे नाल कल्याण नहीं हो सकदा । ते
अगर असी supreme court जप लईये सतिनामु नूं जप
लईये ते बाकी दी चार सेशन कोटीं दे आर्डर जेड़े ने ना किसे
कम नहीं आणे । यानि के supreme नूं जप लो ओदा आर्डर
जेब विच होवे ते कोई कुछ कर ही नहीं सकदा । उसे ढंग दे
नाल अगर असी आत्मा दा कल्याण करना चाहदें हां ते सिर्फ
जपण दा विषय नहीं है ऐ है अमल दा विषय है । जदतकण
असी विशे - विकार त्यागां नहीं, विशे की है संसार, विकार
की है मन यानि के विशे - विकार दी defination असी अज
तक नहीं समझ सके और जदतकण इस defination ते पूरा

नहीं उतरदे यानि के संसार दे विच गुजारे मात्र दी प्रविष्टि
साडा करम पूरा नहीं हो सकदा । करम पूरा नहीं होयेगा ते ऐ
उपासना दा विषय है उपासना दा इक अंग है कि चौकड़ी मार
करके बैठ करके तीसरे तिल ते ध्यान नूं टिकाणा ऐ उपासना
हैगी है । पर असी शरीर दी मर्यादा दे विच नहीं हाँ, संसार दी
मर्यादा दे विच नहीं है । गुरु दे हुकम कीते गये उपदेश वाणी
दे यानि के झाड़ू असी लगा लेआ लंगर पका लऐ सारीयाँ गलाँ
कर लईयाँ ते ऐ ते सिर्फ इक अंग मात्र है । ते असली गल
सीगी आत्मा दा कल्याण करन वास्ते । यानि के ऐ सभ करके
वी असी अंतर दे विच मैल इकट्ठी कीती क्यों ? क्योंकि ऐथे
अख वी चल रही है जुबान वी चल रही है अन्दर नीतियाँ वी
चल रहीयाँ ने बड़े - 2 गुट और सिआणता लिया करके असी
गुरु घर दे विच कम करदे हाँ ऐ सारीयाँ नीतियाँ जेड़ियाँ ने
सानूं बंधन दे विच लै आण गीआं ते ऐ सारे बंधनाँ तों निकलण
लई यानि संसार दे गुरु दे हुकम दी मर्यादा दे विच आण लई
संसार दे विच गुजारे मात्र दी प्रविष्टि गुरु नानक साहब इको
ही बचन है गुजारे मात्र दी प्रविष्टि । यानि जहर ते जहर है
यानि के गुजारे मात्र दी प्रविष्टि दा वी हिसाब देणा पयेगा
बिल्कुल शक नहीं पर असी इतना हिसाब इकट्ठा कर लईये
कि ओदे थले ही दब जाईये यानि के प्राण शक्ति ही खत्म हो

जाये हिसाब करदेया - 2 ते साडा कल्याण कदों होयेगा ।
यानि के गुजारे मात्र दी प्रविष्टि तों उते जितनी मर्जी दलीला
दे लो । जितनी मर्जी सिआणतां कर लो दे रहे ने बैठे इस वक्त
। कोई फर्क नहीं पैंदा काले चिटृ पास बहुत सारे मिल जाणगें
ते ऐ काले चिटृ पास सानूं ब्रह्म तक ही रखणगें क्योंकि ब्रह्म
दी सीमा विच रखणगें । पारब्रह्म दा हरा कार्ड जेडा green
card जिसनूं कहदें ने ओ कोई विरला ही हासिल कर पायेगा
कौण । “कहै प्रभ अवरु अवरु किछु कीजै सभ बादि सीगारु
फोकट फोकटइआं ।” कि परमात्मा ने जो कहा है अमल
करन वाला ही सीगार दा फल नहीं बणेगा नहीं ते सारा शृगारं ।
यानि के बिल्कुल फालतू कीता वी ते मजदूरी वी न मिली बेकार
हो करके इस मुल्क दे विच नगे असी आवागें ।

ते साथ - संगत जी अज दी बाणी दे विच गुरु
नानक साहब ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिता है साडे कितने ही
भ्रम सन कितने ही भेद सन । इस जगह बैठ करके असी सच
नूं बयान वी नहीं कर सकदे । गुरु साहब जितनी वी बाणी देंदे
ने सारी सचखण्ड दी उस अकाल पुरुख दी बंदगी ओदी ताकत
वी देंदे ने । कोई लफजा दे जरिये कोई मिसाला दे जरिये
सिर्फ आपणे अंग नूं समझाणा चाहदें ने इस तों अगे गुरु
साहबा दा कोई वी मकसद नहीं होंदा और कोई वी माई दा

ਪਾਰਾ ਕੋਈ ਹੋਰ ਅਰ्थ ਕਡਦਾ ਹੈ ਇਸ ਸਾਰੀ ਪ੍ਰਕਿਧਾ ਦਾ ਨ ਤੇ ਕੋਈ
ਵਡਿਆਈ ਨ ਕੋਈ ਨਿਨਦਾ ਔਰ ਨ ਹੀ ਓਦੇ ਕਡੇ ਗਿਆ ਅਰਥਾਂ ਦਾ ਕੋਈ
ਮਤਲਬ ਹੈ ਇਸ ਕ੍ਰਿਧਾ ਦੇ ਨਾਲ ਏ ਸਾਰੀ ਉਖਦੀ ਮਨਮਤ ਹੈ ਗੁਰਮਤ
ਦਾ ਏਥ ਸਾਰੀ ਪ੍ਰਕਿਧਾ ਦੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਵੀ ਸਮਾਂਵਨਾ ਨਹੀਂ । ਸ਼ਬਦ ਗੁਰੂ
ਅਤੇ ਦਾਸ ਦੀ ਸਾਰੀ ਸਾਥ - ਸ਼ਗਤ ਜੂਂ ਪਾਰ ਭਰੀ ਸਲਾਮ ।

